ऋग्वेद   ओ३म्   यजुर्वेद

यज्ञ योग विशेषांक

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 20

वर्ष : 30   चैत्र-वैशाख   वि०स० 2075   अप्रैल 2018   अंक : 4

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून   वजन: 50 ग्राम

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून में आयोजित

चतुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद   अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

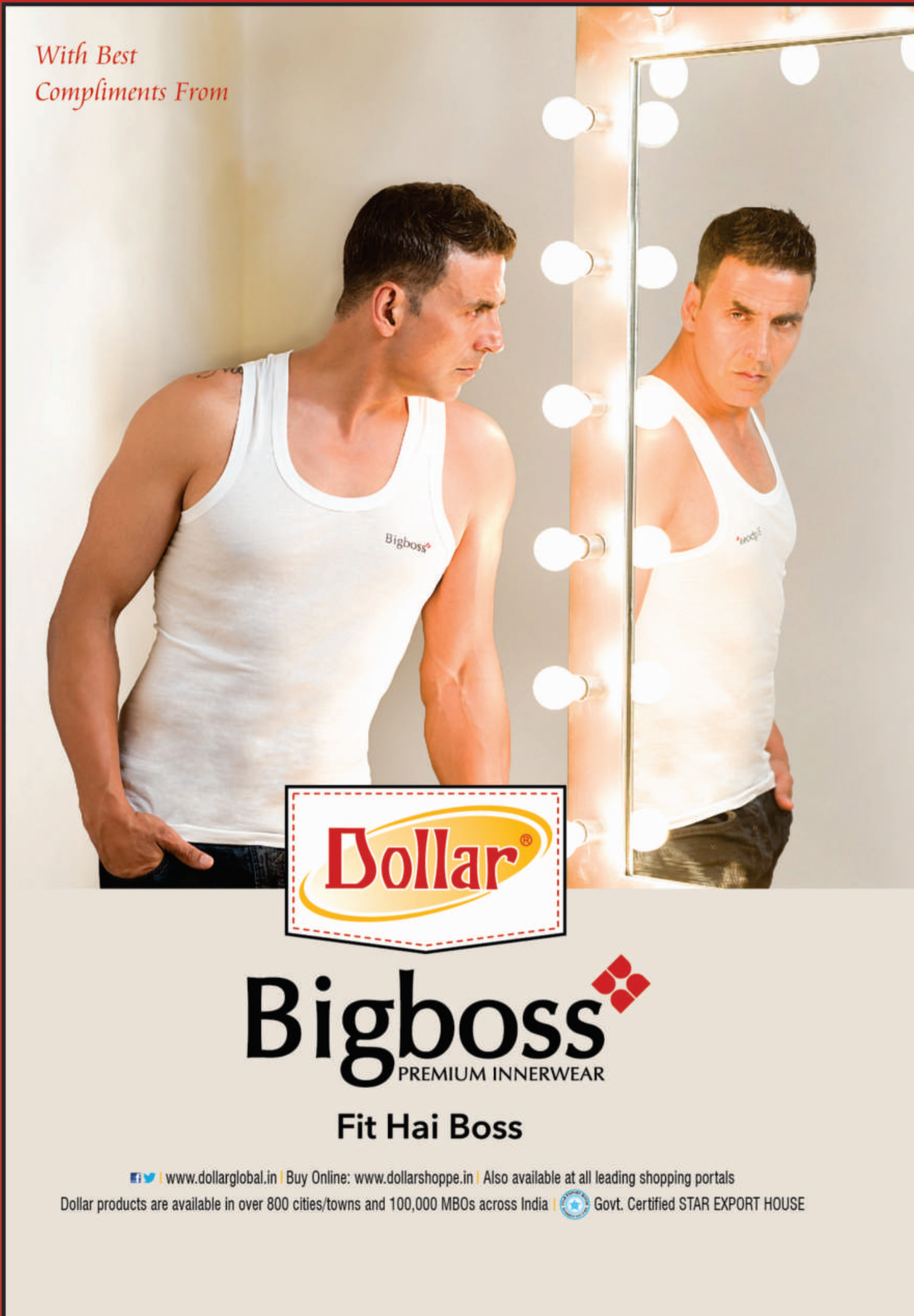
With Best
Compliments From
Bigboss
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ओ३म्

पवमान

वर्ष–30 अंक–4

चैत्र–वैशाख 2075 विक्रमी अप्रैल 2018

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119 दयानन्दाब्द : 193

★

–: संरक्षक :–

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

डॉ. कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ. कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत		3
स्वाध्याय की महिमा	डॉ. कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
अग्निहोत्र का दार्शनिक स्वरूप	डॉ. कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	7
यज्ञ एवं योग मनुष्य जीवन के	मनमोहन कुमार आर्य	11
चापेकर बन्धु	स्वामी यतीश्वरानन्द	14
Eat Vegetarian	Mrs Monika Khosla	16
देवी अंजना की अग्नि परीक्षा	श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम	17
धर्म का चौथा लक्षण	डॉ. प्रियंवदा वेदभारती	18
ग्रीष्मोत्सव कार्यक्रम		19
परमपिता परमात्मा बड़ा दयालु है	स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती	23
तपोवन श्रेष्ठ साधनास्थली	स्वामी शिवानन्द	24
योग शिविर का मेरा अनुभव	गिरधारी लाल आर्य	25
चतुर्वेद पारायण यज्ञ का संक्षिप्त विवरण	इं. प्रेम प्रकाश शर्मा	28
मेरे योग गुरू स्वामी चित्तेश्वरानन्द	ए.एस. वर्मा	32
संसार की हर वस्तु ईश्वर की वस्तु	मनमोहन कुमार आर्य	34

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज — रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज — रु. 1000/– प्रति माह

पवमान पत्रिका के रेट्स

1. मासिक मूल्य (1 पत्रिका) — रु. 20/– एक प्रति
2. वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष) — रु. 200/– वार्षिक
3. 15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य — रु. 2000/–

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

यज्ञ, योग और स्वाध्याय

यज्ञ शब्द 'यज्' धातु से निष्पन्न होता है और इसके देवपूजा, संगतिकरण और दान ये तीन अर्थ होते हैं, जो इस शब्द में अन्तर्निहित हैं। तीनों शब्द बहुत अधिक व्यापक अर्थों और भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। महर्षि ने अपने समस्त ग्रन्थों और वेदभाष्य में इन शब्दों में अन्तर्निहित व्यापक अर्थों और भावों को यज्ञ के परिप्रेक्ष्य में वर्णित किया है। महर्षि ने केवल होम करने को ही यज्ञ नहीं माना है अपितु कहा है कि मनुष्यों को चाहिए कि संसार के उपकार के लिए जैसे विद्वान् लोग अग्निहोत्र यज्ञ का आचरण करते हैं, वे वैसे अनुष्ठान करें। (यजु0 १७.५५) महर्षि ने यज्ञ का पठन–पाठनरूप भी हमारे समक्ष रखा है। वे कहते हैं कि जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन–पाठन रूप यज्ञकर्म करने वाला मनुष्य है, वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा सन्तोष करने वाला होता है, इसलिए ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है। (यजु0 ७.२७) प्रजापति ने स्वयं यज्ञ के द्वारा इस ब्रह्माण्ड को प्रादुर्भूत किया है। पुरुष सूक्त में सृष्टि के प्रारम्भ में यज्ञ का चित्रण करते हुए कहा गया है कि सृष्टि के आरम्भ में होने वाले इस यज्ञ में प्रजापति ने वसन्त को आज्य, ग्रीष्म को समिधाएं और शरद को हवि बनाकर प्रस्तुत किया था। इस प्रकार सृष्टि का मूल उद्गम यज्ञ ही है। इसी सूक्त के एक अन्य मंत्र में यज्ञ की सात परिधियां और इक्कीस समिधाएं प्रतिपादित की गई हैं। यज्ञ का प्रयोजन प्राणिमात्र का कल्याण है और जो विज्ञान प्राणिमात्र के लिए होता है, वह यज्ञ कहलाता है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है–यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।

योग का अर्थ है– मिलाना या जोड़ना। मनुष्य अपने आप में एक प्रकार से अपूर्ण होता है और इस अपूर्णता को मिटाने के लिए किसी दूसरी शक्ति से अपने को जोड़कर अपनी अपूर्णता को दूर करते हुए अधिक शक्ति संचय करता है। योग का अर्थ है समाधि, जो चित्त की सभी अवस्थाओं में होने वाला धर्म है। आजकल लोक में प्रचलित हठयोग जिसमें आसन ओर व्यायाम हैं को ही योग या योगासन कहते हैं परन्तु वास्तविक योग चित्त की वृत्तियों का निरोध करते हुए आत्मसाक्षात्कार कर परमसाक्षात्कार करने से पुरुष का मोक्ष का अधिकारी बनना है।

स्वाध्याय को परिभाषित करते हुए महर्षि व्यास ने प्रणव आदि पवित्र मन्त्रों का जप और मोक्षशास्त्रों का अध्ययन बताया है। वेद परमात्मा का ज्ञान होने से मोक्षविद्या का भी ग्रन्थ है। अतः वेदों का स्वाध्याय करना परमावश्यक कार्य है। आजकल विना गुरु के विद्या अर्जित करना सम्भव नहीं है। इसे सम्पादित करने की राह में इन पंक्तियों के लेखक ने वेदाध्ययन में अपनी योग्यता बढ़ाने हेतु अथर्ववेद में पी0एच0डी0 की उपाधि प्राप्त करने का सफल प्रयास किया है। भले ही किसी उपाधि की प्राप्ति करने हेतु स्वाध्याय करना आवश्यक नहीं है अपितु यह हमें आत्मोन्नति के मार्ग पर ले जाने में अवश्य ही सहायक है। इसलिए वेदमार्ग के पथिक को सदैव वेदाध्ययन के कार्य में प्रयत्नशील रहना चाहिए। यज्ञ, योग और स्वाध्याय हमें आर्यत्त्व के श्रेष्ठ मार्गों की ओर प्रशस्त करते हैं अतः इनके विभिन्न पक्षों पर विचार करते हुए, यह विशेषांक सुधी पाठकों को समर्पित है।

डॉ. कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

वेदामृत

मानव शरीर रूपी यज्ञशाला

सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्।
सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वप्रजौ सत्रसदौ च देवौ॥
-यजुः 34 । 55

ऋषिः- कण्वः॥ देवता-आध्यात्मं॥ छन्दः-भुरिग्जगती॥

विनय-यह शरीर भगवान् ने तुझे यज्ञ करने के लिए दिया है। यह देह पवित्र यज्ञशाला है। इसमें बैठे हुए सात ऋषि भगवान् का यजन कर रहे हैं। आंख देख रही है, कान सुन रहा है, नासिका सूघ रही है, त्वचा स्पर्श कर रही है, जिह्वा रस ले रही है, मन मनन कर रहा है और बुद्धि निश्चय कर रही है। ये सातों ऋषि शब्द, रूप, गन्ध, स्पर्श, रस का ज्ञान करते हुए, मनन और अवधारण करते हुए अपनी इन ज्ञान-क्रियाओं द्वारा भगवान का यजन कर रहे हैं। ये ज्ञानशक्तियाँ हमारे अन्दर भगवद्‌यजन के लिए ही रखी गई है। हमारी प्रत्येक ज्ञान-प्राप्ति भगवत्प्राप्ति के लक्ष्य से ही होनी चाहिए और इन सातों ज्ञानेन्द्रियों (बाह्य और अन्दर के करणों) के साथ एक-एक प्राणशक्ति भी काम कर रही है, जिन्हें सात शीर्ष प्राण कहते हैं। ये सात प्राण इस 'सद्' की- इस यज्ञशाला की- रक्षा पूरी सावधनता के साथ, बिना प्रमाद किए कर रहे हैं। इस प्रकार इस यज्ञशाला में निरन्तर यह यज्ञ चल रहा है। हम हमेशा कुछ न कुछ ज्ञान (अनुभव) करते रहते हैं- देखते, सुनते या मनन आदि करते रहते हैं। स्वप्नावस्था में भी यह देखना-सुनना बन्द नहीं होता। हां सुषुप्ति-अवस्था में जब इन सात ऋषियों के 'आपः' (ज्ञानप्रवाह) सुषुप्ति के लोक में लीन हो जाते हैं, हमें कुछ भी अनुभव नहीं हो रहा होता, तब क्या यह यज्ञ भंग हो जाता है? नहीं, तब भी दो देव जागते हैं। ये दोनों देव कभी सोने वाले नहीं, इन्हें कभी नींद दबा नहीं सकती, अतः ये 'सत्रसदौ' तब भी यज्ञ में बैठे हुए जागते रहते हैं। ये हैं- (1) आत्म-चैतन्य और (2) प्राण। इन सात ऋषियों को दर्शनशक्ति देने वाला देव एक है ओर इन रक्षक प्राणों को प्राण-शक्ति देने वाला दूसरा है। ये दोनों देव-ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के देव-तब भी जागते रहते हैं और ज्ञान तथा कर्म द्वारा चालने वाले इस यज्ञ की इन दोनों शक्तियों को निरन्तर कायम रखते हैं, बल्कि पुष्ट करते हैं। इस प्रकार यह यज्ञ चौबीसों घण्टे निरन्तर चलता है, सौ वर्ष तक चलता रहता है, जब तक जीवन है तब तक चलता रहता है।

परन्तु क्या हम इस शरीर-यज्ञशाला को यज्ञशाला की भांति पवित्र रखते हैं? कहीं यज्ञ करने वाले ये सात ऋषि ज्ञानक्रिया द्वारा भगवद्‌यजन करना छोड़कर अपने ऋषित्व से भ्रष्ट तो नहीं हो जाते?

शब्दार्थ- शरीरे सप्त ऋषयः प्रतिहिताः= शरीर में सात ऋषि स्थापित हैं **सप्त सदं अप्रमादं रक्षन्ति**=सात हैं जो कि इस सद [स्थान, यज्ञशाला] की प्रमाद रहित होकर रक्षा करते रहते हैं। **स्वपतः सप्त आपः लाकं ईयुः**=सुषुप्तावस्था में ये सात ज्ञानप्रवाह अपने लोक में लीन हो जाते हैं, **तत्र च**=तो वहां भी **सत्रसदौ**=यज्ञ में बैठे रहने वाले **अस्वप्रजौ**=कभी न सोने वाले **देवौ**=दो देव **जागृतः**=जागते रहते हैं।

स्वाध्याय की महिमा

–डॉ. कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

सु+आङ् अधिपूर्वक इङ्–अध्ययने धातु से स्वाध्याय शब्द बनता है। स्वाध्याय शब्द में सु, आ और अधि तीन उपसर्ग हैं। 'सु' का अर्थ है उत्तम रीति से, 'आ' का अर्थ है आद्योपान्त और 'अधि' का अर्थ है अधिकृत रूप से। किसी ग्रन्थ का आरम्भ से अन्त तक अधिकारपूर्वक सर्वतः प्रवेश स्वाध्याय कहलाता है। आचार्य यास्क द्वारा लौकिक भाषा के लिए भाषा शब्द और वेद के लिए अध्याय शब्द का प्रयोग किया गया है। इस अर्थ पर विचार करने के उपरान्त हम देखते हैं कि वह अध्ययन ही स्वाध्याय कहा जा सकता है, जिसमें वेद का अध्ययन सम्मिलित हो। इसके अतिरिक्त स्वाध्याय का अर्थ है– 'स्वस्य अध्यायः' अर्थात् अपनी सत्ता का अध्ययन, आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना और परब्रह्म का स्वरूप जानने के लिए अध्ययन करना स्वाध्याय है। महर्षि पतंजलि द्वारा योगदर्शन के साधनापाद के प्रथम सूत्र में कहा गया है– ''तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि क्रियायोगः'' अर्थात् तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान यह योग की क्रिया हैं। स्वाध्याय सूक्ष्म शरीर का विषय है। इससे अहंकार, मन और बुद्धि शुद्ध होती है। स्वाध्याय शब्द तप और ईश्वर प्रणिधान दोनों के मध्य में है। इस शब्द से तप और ईश्वर प्रणिधान दोनों की पुष्टि होती है। स्वाध्याय न करने वाला व्यक्ति तपस्वी नहीं बन सकता है और न ही उसका ईश्वर पर विश्वास दृढ़ हो सकता है।

स्वाध्याय के लाभ– शतपथकार ने स्वाध्याय के लाभों का वर्णन करते हुए एक मंत्र (11.5.7.1) में कहा है कि इससे व्यक्ति ''युक्तमना भवति'' अर्थात् समाहित मन वाला या स्थिरचित्त हो जाता है। स्वाध्याय का दूसरा लाभ है कि वह, ''अपराधीनो भवति'' अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति किसी की पराधीनता स्वीकार नहीं करता है। वह इन्द्रियों के रूप, रस, गन्ध आदि विषयों के वश में नहीं रहता है। तीसरा लाभ है–''अहरहरर्थान् साधयते'' अर्थात् वह दिनों–दिन अर्थों की सिद्धि करता है। यहां शतपथकार का अर्थ से आशय शब्द के पीछे जो गहन अर्थ है, उसकी सिद्धि कर लेना है। चौथा लाभ है–''सुखं स्वपिति'' अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति चैन की नींद सोता है। पांचवां लाभ है– ''परम चिकित्सक आत्मनो भवति'' अर्थात् वह अपनी आत्मा का चिकित्सक हो जाता है, वह अपने मानसिक रोगादि विकारों की स्वयं चिकित्सा कर सकता है। छठा लाभ है– ''इन्द्रियसंयमः भवति'' अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति इन्द्रिय संयमी हो जाता है। सातवां लाभ है– ''एकरामता भवति'' अर्थात् वह केवल एक तत्त्व परमात्मा से खेलता है। सांसारिक सभी खेलों से विमुख होकर केवल परमात्मा में ही आनन्द लेता है। आठवां लाभ है– ''प्रज्ञावृद्धिर्भवति'' अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति पण्डित बन जाता है। नवां लाभ है– ''ब्राह्मण्यम्'' अर्थात् उसमें ब्रह्मण्यता आ जाती है। ब्रह्मण्यता के आने से उसमें सभी प्राणियों के हित की कामना, सर्वदुःखानुभूति, संवेदनशीलता, परोपकारिता, स्वार्थत्याग, परमतपस्विता आदि गुण स्वतः आ विराजते हैं। दसवां लाभ है– ''प्रतिरूपचर्याम्''

अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति वह दर्पण है जिसमें हर सद्गुण की प्रतिकृति या छाया देख सकते हैं। ग्यारहवां लाभ है– ''यशः'' अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति को यश की प्राप्ति होती है। बारहवां लाभ है– ''लोकपक्ति'' अर्थात् उसका लोक–परिपाक हो जाता है या उसे लोक सिद्धि प्राप्त हो जाती है। तेरहवां लाभ है– ''अर्चा–बुद्धि'' अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति की अर्चना होती है। उसके प्रभाव से जनगण में विनय, श्रद्धा, नम्रता आदि गुण आ जाते हैं और सभी श्रद्धापूर्वक उसका

आदर करते हैं। चौदहवां लाभ है– ''दानशीलता'' अर्थात् उसे दान और दक्षिणा की प्राप्ति होती है। पन्द्रहवां लाभ है– ''अज्येयतया'' अर्थात् स्वाध्यायशीलता से व्यक्ति अज्येय हो जाता है। सोलहवां लाभ है– '' अवध्यता'' अर्थात् वह सभी के लिए अवध्य हो जाता है।

स्वाध्याय के विषय में शतपथ ब्राह्मण में (11. 5.6.3) में कहा गया है– ''यावन्तं ह वा इमां पृथिवीं वित्तेन पूर्णां ददँल्लोकं जयति त्रिस्तावन्तं जयति।'' अर्थात् धन से परिपूर्ण पृथिवी का दान देने पर जितने लोक जीते जा सकते हैं, स्वाध्यायशील व्यक्ति ठीक उससे तिगुने लोकों को जीत लेता है। यदि सामान्य यज्ञ करने वाला भूलोक को जीतता है, तो स्वाध्याय–यज्ञ करने वाला भूर्, भुवर् और स्वर् तीनों लोकों को जीत लेता है। यदि सामान्य यज्ञ करने वाला मनुष्यलोक को जीत लेता है, तो स्वाध्यायशील व्यक्ति ठीक उससे तिगुने लोकों, मनुष्यलोक, पितृलोक और देवलोक को जीत लेता है। इसी मंत्र में याज्ञवल्क्य आगे कहते हैं– ''भूयांसं चाक्ष्यं (लोकं जयति) य एवं विद्वान् अहरहः स्वाध्यायमधीते'' अर्थात् जो विद्वान् इस प्रकार दिन–प्रतिदिन स्वाध्याय करता है, वह उससे भी बढ़ कर अक्षयलोक को जीतता है। अक्षयलोक का अर्थ है– न क्षीण होने वाला ब्रह्मलोक।

स्वाध्याय से पुनर्मृत्यु से मुक्ति– शतपथ ब्राह्मण में (11.5.6.9) में कहा गया है– ''अति ह वै पुनर्मृत्युं मुच्यते। गच्छति ब्रह्मणः सात्मताम्।'' अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति पुनर्मृत्यु से मुक्त हो जाता है। वह परमेश्वर के समान परान्तकाल तक जन्म–मृत्यु बन्धन से छूट जाता है। इस प्रकार एक बार के प्रयत्न से यदि उसे ब्राह्मणत्व प्राप्त हो गया तो उसका ब्राह्मणत्व मरता नहीं है और पुनर्जन्म प्राप्त करने पर वह, वहीं से कार्य आरम्भ कर देता है क्योंकि वह स्वाध्याय से ब्रह्म की सात्मता को प्राप्त कर लेता है अर्थात् वेद को आत्मसात कर लेता है, ब्रह्म (आनन्द) को आत्मसात कर लेता है।

वेद में वर्णित स्वाध्याय के लाभ– वेद में अनेक स्थानों पर स्वाध्याय के लाभ बताए गए हैं। ऋग्वेद के एक प्रसिद्ध मंत्र में कहा गया है–

पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम्।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्।। ऋग्वेद 9. 67.32।।

अर्थात् जो व्यक्ति अग्नि, वायु आदि ऋषियों द्वारा सम्यक् भरण की गई रसीली पवित्र ऋचाओं का, वेदज्ञान का अधिकृत रूप से पारायण करता है और समय आने पर उनका प्रवचन भी करता है, उस स्वाध्यायशील और प्रवचनकर्ता के लिए वेदरस से युक्त वाणी क्षरणशील दुग्ध, घृत और शहद आदि हर प्रकार के उत्तम पेयों को देकर परिपूर्ण कर देती है।

परमेश्वर ने आदि सृष्टि में वेद का ज्ञान देते हुए अथर्ववेद (19.71.1) के एक मंत्र से जीवों के कल्याण के लिए अनेक लाभों का वर्णन किया है–

''स्तुता मया वरदा वेदमाता। प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्''

परमेश्वर कहते हैं कि मैंने ही जिसका स्तवन अथवा प्रस्ताव किया है और जो वेद–माता समस्त ज्ञान की निर्मात्री, समस्त लाभों की निर्मात्री है और जिसकी कुक्षि में रहकर व्यक्ति द्वितीय जन्म धारण करता है, अतः द्विजनिर्मात्री भी है। यह न केवल द्विजनिर्मात्री है अपितु द्विजों को पवित्र करने वाली है। यह वेदमाता वरों को देने वाली है, परन्तु उस माता का एक आदेश है कि इसे सर्वत्र प्रेरित करो, प्रचारित करो। इससे तुम्हें दीर्घ जीवन, उसका आधार प्राणशक्ति, प्रजनन शक्ति, सन्तान, पशुधन, यश, धन ओर ब्रह्मतेज, ये सात वर मिलेंगे जिनमें सभी लौकिक मंगलों का समावेश हो गया है। इसके अतिरिक्ति एक अन्य पारलैकिक मंगल है, वह भी तुम्हारे लिए है, परन्तु उसके लिए शर्त यह है कि पहले इन सातों लौकिक मंगलों को मुझे दे दो। इन्हें मुझे देकर मोक्षधाम को चले जाओ।

महर्षि पतंजलि ने कहा है– ''स्वाध्यादिष्टदेवतासम्प्रयोगः'' अर्थात् वेदादि मोक्षशास्त्रों के पठन–पाठन, प्रणवादि मंत्रों के जाप

के अनुष्ठान से परमात्मा के साथ सम्प्रयोग = सम्बन्ध स्थापित होकर, उसका साक्षात्कार हो जाता है। महर्षि मनु ने वेद के स्वाध्याय करने का फल बताया है–

वेदाभ्यासोऽन्वहं शक्त्या महायज्ञक्रिया क्षमा।
नाशयन्त्याशु पापानि महापातकजान्यपि।।
यथैधस्तैजसां वह्निः प्राप्तं निर्दहति क्षणात्। तथा ज्ञानाग्निना पापं सर्वं दहति वेदविद्।। मनु0 11. 245–246।।

प्रतिदिन वेद का यथासम्भव अध्ययन–मनन, पंचयज्ञों का अनुष्ठान, तप–सहिष्णुता, बड़े पापों से उत्पन्न पाप–भावनाओं और दुःसंस्कारों को भी नष्ट कर देती है। जैसे अग्नि अपने तेज से समीप आए हुए काष्ठ आदि इन्धन को जला देती है, वैसे ही वेद का ज्ञाता, वेद रूपी अग्नि से सब आने वाली पाप–भावनाओं को जला देता है। जब साधक वेद के स्वाध्याय से अपनी सभी पाप–भावनाओं औा पाप–संस्कारों को नष्ट कर देता है, तो ऐसा साधक धर्मनिष्ठ बन कर परमात्मा के ज्ञान द्वारा परमात्मा के सानिध्य को अनुभव करता है। इस प्रकार का ज्ञान होना ही परमात्मा की प्राप्ति है। परमात्मा ही जीवात्मा का इष्टदेव है और परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेदज्ञान से ही परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम होता है। महर्षि व्यास ने 1.28 के भाष्य में कहा है– ''स्वाध्याययोगसंपत्त्या परमात्मा प्रकाशते'' अर्थात् स्वाध्याय और योग की सम्पत्ति से परमात्मा का ज्ञान हो जाता है। महर्षि व्यास ने 2.32 के भाष्य में कहा है– ''स्वाध्यायो मोक्षशास्त्राणामध्ययनं प्रणवजपो वा'' अर्थात् मोक्ष का उपदेश करने वाले वेदादि सत्यशास्त्रों का अध्ययन = पठन–पाठन करना और प्रणव = ओंकार का जप करना स्वाध्याय है। ब्रह्मविद्या का जानकार वही होता है जो ईश्वर के लिए समर्पित हो। ईश्वर की अनुभूति करने के लिए अनेक लोग प्रयास करते रहते हैं, किन्तु बिरले ही यथार्थ रूप में ईश्वर के निकट पहुंच पाते हैं या उसकी अनुभूति कर पाते हैं। इसका कारण साधकों में पात्रता का अभाव होना है। संसार में दिखाई दे रही भौतिक वस्तुओं से मिलने वाले सुखों से अपने मन को हटाकर सर्वव्यापक परमात्मा में लगाना पड़ता है। ईश्वर अनुभूति के लिए परोपकारिता, दयालुता आदि गुणों को धारण करते हुए जीवमात्र में ईश्वर की छवि देखने की दृष्टि पैदा करनी होती है। प्रत्येक साधक चाहता है कि उसे सुख की प्राप्ति हो। ऐसा सुख भौतिक वस्तुओं में नहीं है। यह तो ईश्वर की वास्तविक अनुभूति होने पर ईश्वर से ही प्राप्त हो सकता है, जिसके लिए यम, नियम आदि योग के आठों अंगों की साधना करते हुए समाधि लगानी पड़ती है। ज्ञान, भक्ति और कर्म ऐसे उपाय हैं, जिनसे पात्रता में वृद्धि की जा सकती है। जिस साधक को उसकी पात्रता को देखते हुए परमेश्वर चयनित कर लेता है, उसे ही वह प्राप्त हो पाता है। ज्ञानमार्ग का पथिक स्वाध्याय के द्वारा ही इस ओर आगे बढ़ सकता है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि स्वाध्याय मोक्ष मार्ग का प्रथम सोपान है।

पातंजल योगधाम, आर्यनगर ज्वालापुर, हरिद्वार में चैतन्य पारायण महायज्ञ पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में 11 मार्च से 12 अप्रैल 2018 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं

निवेदक – **मेधानन्द सरस्वती**
मो. 9897804133

अग्निहोत्र का दार्शनिक और व्यावहारिक स्वरूप

– डॉ0 कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अग्निहोत्र की परिभाषा है–'अग्नये होत्रं हवनं यस्मिन् कर्मणि क्रियते तद्' अर्थात् यह अग्निहोत्र अग्नि और होत्र का सम्मुच्चय है। सामान्य रूप से अग्नि में हवियों के समर्पण की प्रक्रिया अग्निहोत्र कहलाती है। तैत्तिरीय–संहिता में कहा गया है कि आत्मकल्याण के लिए जागरूक प्रत्येक व्यक्ति को देवऋण से उऋण होने के लिए यज्ञ करना चाहिए– जायमानो वै ब्राह्मणस्त्रिभिर्ऋणै ऋणवान् जायते ब्रह्मचर्येण ऋषिभ्यो यज्ञेन देवेभ्यो प्रजया पितृभ्यः। यज्ञों को हम दो श्रेणियों में रख सकते हैं– (१) श्रौत यज्ञ– इनके अन्तर्गत दर्शपौर्णमास, अग्निष्टोम, वाजपेय, अश्वमेध आदि प्रमुख हैं (२) स्मार्त यज्ञ– इनमें पंचयज्ञ प्रमुख हैं। यजुर्वेद में कहा पुरुष सूक्त का एक मंत्र है–

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शद्धवि।। (यजु0 १८.६)

सृष्टि के आरम्भ में होने वाले पुरुष सूक्त में सृष्टि के प्रारम्भ में यज्ञ का चित्रण करते हुए कहा गया है कि प्रजापति ने वसन्त को आज्य, ग्रीष्म को समिधाएं ओर शरद को हवि बनाकर प्रस्तुत किया था। (ऋ0 १०.९०.६) इस प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड का मूल उद्गम यज्ञ ही है। इसी सूक्त के एक अन्य मंत्र में यज्ञ की सात परिधियां और इक्कीस समिधाएं प्रतिपादित की गई हैं। यजुर्वेद के एक मंत्र में कहा गया है–

ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुखं च मे शयनं च मे सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पताम्।। (यजु0 १८.६)

इस मंत्र का भावार्थ यह है कि सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा के द्वारा वेद का ज्ञान प्रदान किया गया जिसमें निहित यज्ञविज्ञान में अनेक समस्याओं का निदान मिलता है। यज्ञ से सत्याचरण, नीरोगता, दीर्घजीवन, शत्रुत्व का अभाव, अभय, सुख, निद्रा, सुन्दर उषःकाल, दिन का शुभ आरम्भ प्राप्त होते हैं। प्रजापति ने स्वयं इस ब्रह्माण्ड को यज्ञ के द्वारा प्रादुर्भूत किया है। यज्ञ भौतिक होते हुए भी आध्यात्मिक है, यह न केवल सृष्टि विद्या के रहस्यों का प्रतिपादन करता है, अपितु वर्तमान मनुष्य जीवन की समस्याओं का युक्तिसङ्गत समाधान प्रस्तुत करता है। महर्षि दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में तीन प्रकार के यज्ञ बताए हैं– १. अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेधपर्यन्त, २. प्रकृति से लेकर पृथिवी पर्यन्त जगत् का रचनारूप यज्ञ और ३. सत्संग आदि विज्ञान से अध्यात्म एवं योगरूप यज्ञ।

यह वैज्ञानिक तथ्य है कि अग्नि में डाला गया पदार्थ नष्ट नहीं होता, अपितु वायु के सहयोग से सूक्ष्मातिसूक्ष्म बन कर ज्वालाओं के बीच से ऊपर उठ कर वायुमण्डल के सहयोग से आकाश में व्याप्त हो जाता है। अग्नि में डाला गया सुगन्धित द्रव्य, चारों ओर

सुगन्ध फैलाते हुए, सब लोगों सुख प्रदान करता है। महर्षि दयानन्द ने संस्कारविधि में होम के चार प्रकार के द्रव्य बताए हैं– प्रथम सुगन्धितकारक– इसमें कस्तूरी, केशर, अगर, तगर, श्वेतचन्दन, इलायची, जायफल, जावित्री आदि। द्वितीय पुष्टिकारक, इसमें घृत, दूध, फल, कन्द, अन्न, चावल, गेहूँ, उड़द आदि, तृतीय

मिष्टकारक और चतुर्थ रोगनाशकसोमलता अर्थात् गिलोय आदि ओषधियां। वेदों में ऋतु के अनुकूल हविर्द्रव्यों का विधान मिलता है।

आध्यात्मिक अग्निहोत्र– प्राण ओर अपान अध्यात्म (= शरीर के देवता) कहे गए हैं। इनका जन्म से लेकर मृत्यु तक अग्निहोत्र चलता रहता है। इस आध्यात्मिक अग्निहोत्र में कुशल व्यक्ति प्राणायाम की गति को अपने वश में करके प्राणायाम में अपने को कुशल करके प्राण में अपान और अपान में प्राण का होम करके अर्थात् प्राणायाम–परायण होकर समस्त इन्द्रियजन्य दोषों को नष्ट करके ब्रह्म प्राप्ति के मार्ग में अग्रसर होते हैं।

आदिदैविक अग्निहोत्र– इस सृष्टि में दिन और रात ही अग्निहोत्र का स्वरूप है। दिन का देवता सूर्य और रात्रि का देवता अग्नि है इन्हीं के सहारे चराचर जगत् दिन–रात कार्य करता है।

जीवन में यज्ञ की अनिवार्यता– वैदिक और लौकिक शास्त्रों में विकसित यज्ञों को ही श्रौत और स्मार्त यज्ञ कहा जाता है। श्रौतयज्ञ श्रुति अर्थात् वेद मंत्रों तथा स्मार्तयज्ञ गृह सूत्र आदि शास्त्रों पर आधारित हैं। श्रौतयज्ञों में दर्शपौणमास, अग्निष्टोम, ज्योतिष्टोम, वाजपेय, अश्वमेध आदि प्रमुख हैं। स्मार्तयज्ञों में पंचयज्ञ प्रमुख हैं। सामान्यतः हम यज्ञ को केवल एक कर्मकाण्ड समझते हैं। यह धारणा भ्रान्तिपूर्ण है, क्योंकि यज्ञ एक पवित्र धर्मिक कृत्य के साथ–साथ उत्कृष्ट जीवन दर्शन भी है। यह पवित्रता ओर परमार्थ का प्रतीक भी है। अग्नि स्वयं पवित्र होती है ओर अपने सम्पर्क में आने वाली वस्तुओं को पवित्र बना सकती है। अग्नि अपने लिए कुछ नहीं करती, इसके समस्त क्रिया कलाप परमार्थ के लिए होते हैं। अग्निहोत्र का वास्तविक स्वरूप त्याग, सेवा, सदाचार, परोपकार, उदारता और सहृदयता आदि को जीवन पद्धति में अपनाते हुए जीवन यज्ञ की आहुति में स्वयं को हवि के रूप में समर्पित करना है।

छान्दोग्य उपनिषद् के आधार पर यज्ञीय जीवन– छान्दोग्य उपनिषद् में मनुष्य के जीवन को एक यज्ञ माना गया है। उसकी आयु के प्रथम चौबीस वर्ष का प्रातःसवन है। गायत्री छन्द चौबीस अक्षरों वाला है। प्रातःसवन में गायत्री छन्द का ही प्रयोग होता है। इस यज्ञ के साथ वसु देवता का सम्बन्ध है। प्राण वसु कहलाते हैं। मनुष्य जीवन के अगले चवालीस वर्ष माध्यन्दिन–सवन का समय है। त्रिष्टुप् छन्द चवालीस अक्षरों का होता है। इस यज्ञ के साथ रुद्र देवता का सम्बन्ध है। रुद्र ही प्राण कहलाते हैं। मनुष्य जीवन के शेष अगले अड़तालीस वर्ष तृतीय–सवन है। जगती छन्द अड़तालीस अक्षरों का है। इसके साथ

आदित्य नामक प्राण का सम्बन्ध है। आदित्य ही प्राण है। दार्शनिक महत्त्व का प्रश्न है कि जीवन व प्रकृति के बन्धन से मुक्त कैसे हों?मनुष्य से इतर योनियां केवल भोग योनियां हैं। केवल मनुष्य ही कर्म करके आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है। मुक्ति के लिए पाप कर्मों का क्षय होना और पुण्य कर्म अर्जित करना आवश्यक है।

यज्ञीय अध्यात्म– यज्ञ की भावना मन ओर आचरण से की जानी चाहिए। इसमें 'इदं न मम' का भाव सर्वोपरि होना अनिवार्य है। यज्ञ की एक परिभाषा में कहा गया है– 'इज्यन्ते सम्पूजिताः तृप्तिमासाद्यन्ते देवा अनेनेति यज्ञः' अर्थात् जिस कार्य में देवगण पूजित होकर तृप्त हों, उसे यज्ञ कहते हैं। यज्ञ के बारे में कहा गया है– 'इज्यन्ते पूज्यन्ते देवा अनेनेति यज्ञः' अर्थात् जिससे देवताओं की पूजा की जाये, उसे यज्ञ कहते हैं। यहां देवपूजन का भाव केवल देवगणों के पूजन से ही नहीं अपितु श्रेष्ठ व्यक्तित्व के धनी, ज्ञानी जनो व गुरु जनों के प्रति अपना सम्मान व्यक्त करना भी है।

यज्ञ में ङ्कयुक्त सामग्रियांः– महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होके, फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है। उनका यह भी कहना है कि सुगन्ध (केसर, कस्तूरी, पुष्प, इत्र आदि की सुगन्ध) का वह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ वायु को निकाल कर शुद्ध वायु का प्रवेश करा सके, क्योंकि उसमें

भेदक शक्ति नहीं है और अग्नि का ही सामर्थ्य है कि उस वायु और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न–भिन्न और हल्का करके बाहर निकालकर पवित्र वायु का प्रवेश करा देती है। कुछ लोग यह सोचते हैं कि पदार्थों को खाने की अपेक्षा जलाकर नष्ट कर देना उचित नहीं है। महर्षि दयानन्द ने इस शंका का समाधान करते हुए लिखा है– 'जो तुम पदार्थविद्या जानते तो कभी ऐसी बात नहीं करते, क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता।' महर्षि का यह भी कहना है कि 'नासत आत्मलाभः न सत आत्महानम्' अर्थात् जो नहीं है वह कभी हो नहीं सकता और जो है वही आगे होता है।....अस्ति से अस्ति होती है। नास्ति से किसी प्रकार नहीं हो सकती।' महर्षि दयानन्द की यह स्पष्ट मान्यता है कि प्रकृति अनादि तथा अनन्त (नष्ट न किए जाने योग्य) है। इसका समर्थन आधुनिक विज्ञान ने द्रव्य अविनाश नियम के द्वारा किया है। इस नियम (Law of Conservation of Mass) के अनुसार 'किसी भी रासायनिक प्रतिक्रिया में भाग लेने वाले पदार्थों के भार का योग अपरिवर्तित रहता है।'

अग्नि में आहुति देने पर होने वाली क्रियाएँ– जब कोई पदार्थ अग्नि में डाल कर आहुति दी जाती है तो अग्नि उसके स्थूल रूप को तोड़ कर सूक्ष्म बना देती है। उक्त मंत्र में अग्नि को 'धूरसि' कहा गया है। महर्षि 'धूरसि' का अर्थ 'भौतिक अग्नि सब पदार्थों का छेदन ओर अन्धकार का नाश करने वाला' है। भौतिक अग्नि इसलिए है कि वह उन होम–द्रव्यों को परमाणुरूवरूप करके वायु और जल में मिलाकर शुद्ध कर दे।' हम इस बात को एक उदाहरण के द्वारा भी स्पष्ट कर सकते हैं। मिर्च खाने से एक या दो व्यक्तियों पर इसका प्रभाव पड़ सकता है, परन्तु यदि हम इसी मिर्च का पाउडर बना कर उड़ा दें तो आस–पास बैठे कई लोगों पर यह प्रभाव डालते हुए खांसी आदि कष्ट दे सकता है।

यज्ञकुण्ड में होने वाली रासायनिक प्रतिक्रियाएँ– यज्ञकुण्ड में हवि के जलने पर उत्पन्न होने वाले पदार्थों का सही–सही आकलन करना सम्भव नहीं है, इसके कई कारण है, जैसे– यज्ञकुण्ड के तापमान में समय– समय पर भिन्नता होने से भिन्न–भिन्न पदार्थ बनना, उनका आपस में मिलकर नया पदार्थ बनाना, आक्सीकरण की क्रिया का वायु की मात्रा के आधार पर न्यूनाधिक होना आदि। फिर भी यज्ञ के द्वारा उत्पन्न होने वाले पदार्थों का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है।

हवन में डाले गए पदार्थों के सम्बन्ध में विचार– हवन में मुख्यतः निम्न प्रकार की वस्तुएं डाली जाती हैं–

(1) लकड़ी– हवन में लगभग 75 प्रतिशत लकड़ी जलाई जाती है जिससे कि अग्नि प्रज्वलित रखी जा सके। लकड़ी के जलने पर लगभग 500 सेल्सियस तापांश होता है। लकड़ी में मुख्य भाग सेलुलोस ओर लिग्रोलुलोस में लगभग 47.62 प्रतिशत हाइड्रोजन, 28.57 प्रतिशत कार्बन और 23.81 प्रतिशत ऑक्सीजन होती है। लकड़ी के जलने पर सेलुलोस और लिग्रोलुलोस का ऑक्सीकरण होता है। उसके बाद धीरे–धीरे जो हाइड्रोकार्बन बनती है, वह 400 से 600 सेल्सियस के बीच जल जाती है। सेलुलोस ओर लिग्रोलुलोस ऑक्सीजन के साथ मिलकर कार्बन डाइआक्साइड और पानी बनाते है।6

(2) कपूर– यज्ञ की अग्नि कपूर को जलाकर प्रज्वलित की जाती है। इसका कुछ भाग बिना किसी रासायनिक परिवर्तन के उड़ जाता है। यह ऑक्सीजन से मिलकर सुगन्ध उत्पन्न करता है और दुर्गन्ध को नष्ट करता है। इसके शेष भाग से तेल बनता है, जिसमें पाइनीन, डाइपैन्टीन, सीनिओल, युजिलॉल, सैफ्रिोल ओर टर्पिनिऑल आदि होते हैं।

(3) घृत– घृत अग्नि को प्रज्वलित रखता है। यह ग्लिसरॉल ओर कार्बोक्सिलिक के संयोग से बनता है। इसमें पाए जाने वाले अम्लों में

पामिटिक अम्ल, ओलीक अम्ल, मिरिस्टिक अम्ल, स्टिएरिक अम्ल ओर लिनोलीइक अम्ल प्रमुख हैं। इसमें थोड़ी मात्रा में ब्यूटिक अम्ल, लौरिक अम्ल, कैप्रिकट अम्ल ओर कैप्रोइक अम्ल आदि भी होते हैं। घृत जलने पर वही पदार्थ उत्पन्न होते हैं जो ग्लिसरॉल और उपरोक्त अम्लों के जलने पर बनते हैं।

हव्य सामग्री– हवन सामग्री में उपस्थित वस्तुएं, जैसे– कपूरकचरी, नागरमोथा, जटामांसी, सफेद चन्दन का चूरा और अगर आदि लकड़ी की भांति स्वयं जलकर ज्वलन की क्रियाओं को पूर्ण करने के लिए गर्मी भी उत्पन्न करती हैं। यज्ञ–सामग्री में कार्बोहाइड्रेटभी विद्यमान रहते हैं, जिनमें चावल, गेहूँ, जौ, उड़द, छुहारे आदि प्रमुख हैं। इनके जलने से स्वास्थ्य के लिए लाभदायक गैसें उत्पन्न होती हैं। फ्रांस के एक वैज्ञानिक टिलवर्ट का विचार है कि

खाण्ड के जलने से फार्मेल्डिहाइड बनता है, जो कृमियों को नष्ट करके वायु को मनुष्यों के लिए उपयोगी बनाता है।

अग्निहोत्र के समय में वैज्ञानिकता– महर्षि दयानन्द के अनुसार– 'सूर्योदय के पश्चात् और सूर्यास्त के पूर्व अग्निहोत्र का समय है।' प्रकाश को इतना महत्त्व देने का कारण यह है कि यज्ञ के समय उत्पन्न पदार्थों में सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में कई प्रकार के रासायनिक परिवर्तन होते हैं। इनमें ऐल्डिहाइड ओर एल्कोहोल ऑक्सीकृत हो जाते हैं। पराबैंगनी प्रकाश में कार्बन डाइआक्साइड पानी के साथ मिलकर फार्मेल्डिहाइड में बदल जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सूर्य के प्रकाश में किया जाने वाला यज्ञ हमारे लिए अत्यन्त लाभदायक है। यज्ञ न केवल मनुष्यों, अपितु समस्त जीवों और पर्यावरण के लिए हितकारी है, इसीलिए हमारे शास्त्रों में ऋषियों ने विभिन्न प्रकार के यज्ञों के प्राविधान रखे हैं। अग्निहोत्र के स्वरूप का विश्लेषण करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यह कार्य व्यष्टि और समष्टि के लिए पवित्र ओर उपयोगी है। हम यज्ञ को जीवन में अपनाकर आध्यात्मिकता के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं।

विनम्र अनुरोध

सम्मानीय बहनों और भाईयों

आप सभी भाई बहन जब तपोवन आश्रम देहरादून में पधारते हैं तो आश्रम की भव्यता और व्यवस्थाओं को देखकर आप अनुभव करते होंगे कि आश्रम बहुत धन सम्पन्न है और आश्रम को किसी अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता नहीं है लेकिन आश्रम की आर्थिक स्थिति से वही लोग विज्ञ हैं जो दिन प्रतिदिन आश्रम के कार्यकलापों को पूर्ण करते हैं। वर्तमान स्थिति में आश्रम के कर्मचारियों को प्रतिमाह वेतन वितरण करने, पवमान मासिक पत्रिका की प्रिंटिंग का भुगतान करने, गौशाला में गायों के लिए आवश्यक भूसे एवं चोकर-दाना आदि का भुगतान करने एवं आश्रम के भवनों की मरम्मत आदि पर होने वाले व्यय की प्रतिपूर्ति करने की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है क्योंकि आश्रम की अपनी कोई भी इनकम नहीं है केवल दान से ही सभी प्रकल्प पूर्ण किये जाते हैं। यदि आप अनुभव करते हैं कि आश्रम भोजन व्यवस्था और अधिक बेहतर की जाय तथा आश्रम का रख-रखाव और अधिक सुन्दर हो तो आपको आश्रम की सहायता के लिए आगे आना चाहिए। यदि आप किसान अथवा व्यापारी है तो आश्रम की सहायता गेहूं, चावल, चीनी, दालें, सरसो तेल, सूजी, बेसन, देसी घी, आदि दान रूप में दे सकते हैं। आप आश्रम के एक कर्मचारी का वेतन रूपये 8000 प्रतिमाह दे सकते हैं अथवा एक गाय के चारे पर होने वाले व्यय रूपये 5000 गौशाला के लिए दान कर सकते हैं इसी प्रकार पवमान पत्रिका के लिए विज्ञापन देकर आप पत्रिका को सुचारू रूप से प्रकाशन में सहायता कर सकते हैं। हमारी हार्दिक इच्छा है कि आप सभी लोगों की कृपा से आश्रम में भोजन की व्यवस्था, कमरो की व्यवस्था आदि में वांछित सुधार किए जाय आशा है आप हमारी प्रार्थना पर विचार करके इस सम्बन्ध में अपना सुझाव एवं सहयोग अवश्य प्रदान करेंगे।

यज्ञ एवं योग मनुष्य जीवन के आवश्यक कर्तव्य

—मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द जी ने वेदानुयायी आर्यों के पांच नित्यकर्म बताते हुए उसमें प्रथम व द्वितीय स्थान पर सन्ध्या एवं देवयज्ञ अग्निहोत्र को स्थान दिया है। प्राचीन ग्रन्थ मनुस्मृति में द्विजों को पंचमहायज्ञों को करने की अनिवार्यता का उल्लेख मिलता है। देवयज्ञ (अग्निहोत्र) अनेक यज्ञों में से एक है जो प्रतिदिन किया जाने वाला कर्तव्य है। यज्ञ को अग्निहोत्र व हवन आदि नामों से जाना जाता है और इसकी विशेषता यह है कि यह अल्प समय साध्य है तथा इसे नित्य करने से इससे गृहस्थ एवं आसपास के लोगों को स्वास्थ्य आदि का लाभ होता है। यज्ञ से वायु एवं वृष्टि जल भी शुद्ध व पवित्र होता है। अग्निहोत्र में योग के आवश्यक अंग ईश्वर स्तुति, प्रार्थना व उपासना को भी स्थान दिया गया है। यद्यपि ऋषि दयानन्द जी ने दैनिक यज्ञ की जो विधि पंचमहायज्ञ विधि और संस्कारविधि पुस्तकों में दी हैं, वहां स्तुति–प्रार्थना–उपासना के आठ मंत्रों को स्थान नहीं दिया है तथापि आजकल जहां जो भी आर्य परिवार वा वैदिक धर्मी यज्ञ करता है, वह इन आठ मंत्रों का अवश्य ही उच्चारण व गान करते हैं। अधिकांश को इन मंत्रों के अर्थ भी ज्ञात होते हैं। ऋषि ने इन मंत्रों के हिन्दी अर्थ बोलने व सुनाने का निर्देश भी किया है। इन यज्ञों से ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना होने के साथ यज्ञ में जिन मंत्रों से आचमन, अग्न्याधान, समिधादान, पंचघृताहुति, जल सिंचन आदि क्रियायें एवं अन्य आहुतियों सहित दैनिक यज्ञ के मंत्रों से आहुतियां दी जाती हैं उनसे भी ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व

उपासना सम्पन्न होती है। इससे योग की अनिवार्य शर्त ईश्वर की निकटता व उसकी प्राप्ति में सहायता मिलती है। ऋषि दयानन्द ने ईश्वर भक्ति अर्थात् ईश्वर की उपासना का फल बताते हुए कहा है कि इससे मनुष्य के गुण–कर्म–स्वभाव सुधरते हैं, ईश्वर की निकटता प्राप्त होती है और मनुष्य की आत्मा का बल इतना बढ़ता है कि पहाड़ के समान दुःख प्राप्त होने पर भी घबराता नहीं है। हमारा यह भी अनुमान है कि शारीरिक दुःख व क्लेशों में जितना कष्ट नास्तिक व सही रीति से ईश्वरोपासना न करने वालों को अनुभव होता है, ईश्वर की उपासना करने वालों को उससे कम अनुभव होता है। इससे प्रतीत होता है कि ईश्वर की भक्ति करने से मनुष्य की दुःखों को सहन करने की शक्ति में वृद्धि होती है।

मनुष्य के जीवन का उद्देश्य ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सत्य स्वरूप को जानना और ईश्वर की भक्ति व उपासना कर उसे प्राप्त करना है। ईश्वर ने जीवात्माओं के सुख भोग व विवेक प्राप्ति के लिए ही यह समस्त संसार बनाया है। इस समस्त

संसार को बनाकर ईश्वर ने जीवों के लिए पृथिवी पर अग्नि, वायु, जल व अन्नादि अनेक उत्तमोत्तम पदार्थ बनाये हैं। परमात्मा ने जीवों के कर्म के अनुसार उन्हें मनुष्यादि शरीर सहित माता – पिता –भगिनी –बन्धु आदि अनेक सम्बन्धी, परिवारजन व इष्ट–मित्र भी दिये हैं। परमात्मा ने मनुष्यों के कल्याण के लिए सृष्टि की आदि में मनुष्यों को वेदों का ज्ञान भी दिया है जिससे इस सृष्टि के रहस्यों को जानने व समझने की योग्यता उत्पन्न होती है और साथ ही मनुष्य ईश्वर, जीव व प्रकृति को यथार्थ रूप में जान सकते हैं। इस कारण प्रत्येक मनुष्य ईश्वर का ऋणी हैं। इस ऋण से उऋण होना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। इसी के लिए वेद व ऋषियों ने सन्ध्या अर्थात् सम्यक ध्यान=योग का विधान किया है। इसमें ईश्वर का उसके द्वारा किये गये उपकारों के लिए धन्यवाद करना मनुष्य का मुख्य कर्तव्य होता है। समस्त सन्ध्या योगानुष्ठान ही है। सन्ध्या के आचमन मंत्र में सन्ध्या का उद्देश्य मनोवांछित आनन्द अर्थात् ऐहिक सुख–समृद्धि और पूर्णानन्द अर्थात् मोक्षानन्द की प्राप्ति को बताया गया है। सन्ध्या की समाप्ति पर नमस्कार मंत्र से पूर्व समर्पण मन्त्र में भी ईश्वर से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति की कामना व प्रार्थना है। हम जानते हैं कि हम ईश्वर से जो भी प्रार्थना करें, उसकी पूर्ति के लिए हमें उसके अनुकूल कर्म व प्रयत्न भी करने होते हैं। ऐसा करने पर ईश्वर हमारी प्रार्थनाओं को पूरा करता है। अतः सन्ध्या करने से ईश्वर की निकटता व मनुष्य के गुण, कर्म व स्वभाव में सुधार होने के साथ ईश्वर का सहाय प्राप्त होता है। सन्ध्या व योग का एक मुख्य अंग स्वाध्याय है। स्वाध्याय वेद एवं वैदिक साहित्य के अध्ययन, उसके चिन्तन व मनन सहित उसके अनुरूप आचरण को कहते हैं। स्वाध्याय से ईश्वर सहित अन्य विषयों के ज्ञान में भी वृद्धि होती है। स्वाध्याय भी एक प्रकार का योग व ईश्वर की उपासना ही है। ईश्वर का सत्य स्वरूप स्वाध्याय व वैदिक विद्वानों के उपदेश आदि से ही जाना जाता है। अतः स्वाध्याय भी हमें ईश्वर के निकट ले जाने व ईश्वर को जानने में सहायक होने से योग ही है। सन्ध्या को जान लेने व उसका नित्य प्रति सेवन करने के बाद ईश्वर के गुणों का निरन्तर ध्यान व धन्यवाद करना तथा स्वाध्याय किये गये विषयों के अनुरूप आचरण करना भी अनिवार्य रहता है। उसे करके हम निश्चय ही योग को सिद्ध कर सकते हैं। ऋषि दयानन्द समाधि को सिद्ध किये हुए योगी थे। उन्होंने उसकी योग को सन्ध्या के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इससे यह भी अनुमान होता है कि समाधि सिद्ध योगी होकर भी ऋषि दयानन्द इसी विधि से सन्ध्या वा ईश्वर का ध्यान आदि करते थे। यदि इससे अधिक व अन्य कुछ करते तो उसे भी वह पुस्तक रूप में अवश्य लिखते। अतः सन्ध्या ही वास्तविक योग है। सन्ध्या करके हम निश्चय ही योग करते हैं व निरन्तर अभ्यास कर व उसे बढ़ाते हुए समाधि प्राप्त कर ईश्वर का साक्षात्कार भी कर सकते हैं। हमारे जो सन्यासी और विद्वान हैं, वह सभी सन्ध्या के माध्यम से ही योग अर्थात् ईश्वर प्राप्ति के साधन व प्रयत्न करते हैं। सन्ध्या में भी यम, नियमों सहित योगासनों का अभ्यास, प्राणायाम आदि करना आवश्यक है।

यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है। यज्ञ में अग्निहोत्र सहित हमें परोपकार के सभी प्रकार के कर्म करने के साथ जीवन को सत्य व सादगी के अनुसार व्यतीत करना आवश्यक है। वेद ने सभी मनुष्यों के लिए भोगों का भोग त्याग पूर्वक करने की आज्ञा की है। दूसरों का दुःख दूर करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना भी योगी के लिए आवश्यक है। योगेश्वर कृष्ण और ऋषि दयानन्द के जीवन में हमें यह दोनों महापुरुष समाज व देश के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए दिखाई देते हैं। हमारे सभी प्राचीन ऋषि योगी थे और वह वनों में रहकर यज्ञादि कर्म निरन्तर करते रहते थे। योगी के लिए यज्ञ व अग्निहोत्र का विधान तो श्रुति ग्रन्थों में है, यज्ञ के त्याग का विधान वैदिक शास्त्र में कहीं नहीं है। हमारा यह भी अनुमान है कि यज्ञ करते हुए मनुष्य यदि योगाभ्यास करता है तो वह

इससे शीघ्र सफल मनोरथ हो सकता है। यज्ञ करने से मनुष्य के पास शुभ कर्मों की एक बड़ी पूंजी संग्रहीत हो जाती है। यज्ञ से जितने अधिक प्राणियों को शुद्ध प्राणवायु व वर्षाजल की शुद्धि से ओषिधियों की शुद्धि व उनके प्रभाव में वृद्धि होती है, उससे उस यज्ञानुष्ठान करने वाली योगी व उपासक की कर्म–पूंजी इतर सभी योगाभ्यासियों से अधिक होने के कारण उसे शीघ्र योग के लाभों की प्राप्ति का होना निश्चित होता है। यज्ञ व अग्निहोत्र ईश्वर आज्ञा भी है। अतः जो यज्ञ नहीं रकते वह ईश्वर की अवज्ञा करते हैं। यज्ञ योग, उपासना व ईश्वर की प्राप्ति में अत्यन्त सहायक एवं उपयोगी है। सभी योगाभ्यासियों को यज्ञ पर विशेष ध्यान देना चाहिये और दैनिक यज्ञ तो अवश्य ही करने चाहिये।

यज्ञ वह अनुष्ठान (प्रक्रिया) है जिससे हम सहस्रों लोगों को शुद्ध प्राण वायु व वर्षा जल सहित आरोग्य प्रदान कर उन्हें लाभ पहुंचाते हैं। योगाभ्यास करके हम अपनी आत्मा को ही ईश्वर से मिलाने का प्रयत्न करते हैं। योग व यज्ञ दोनों के लक्ष्य में इस दृष्टि से समानता है कि दोनों में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना होती है। विचार करने पर यह भी ज्ञात होता है कि यदि यज्ञ व योग दोनों का सहारा आध्यात्मिक व्यक्ति लेता है तो वह अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त कर सकता है। यदि व्यक्ति योगाभ्यास ही करे और यज्ञ की उपेक्षा करे तो उसे अपने लक्ष्य प्राप्ति में अधिक समय लग सकता है।

महर्षि दयानन्द ने योग को सन्ध्या में ही सम्मिलित कर लिया है, ऐसा हम अनुभव करते हैं। महर्षि दयानन्द स्वयं एक उच्च कोटि के योगी थे। वह कई कई घण्टों की समाधि लगाते थे। रात्रि जब सब सो जाते थे तब भी वह समाधि अवस्था में रहते थे। इससे अनुमान है कि उन्होंने ईश्वर का साक्षात्कार किया था। अतः उनका लिखा व कहा एक एक शब्द योग व यज्ञ विषय में प्रमाण है। इस आधार पर उनसे प्राप्त सन्ध्योपासना व यज्ञ की विधियां उनकी मनुष्यजाति को अनुपम देन हैं। यह सन्ध्या विधि व उनके वेदभाष्य का स्वाध्याय मनुष्य को योग में प्रवृत्त कर उसे समाधि तक ले जाते हैं। सन्ध्या में प्रार्थना करते हुए उपासक कहता है कि मुझे धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति सद्यः अर्थात् आज ही हो। यह बात विशेष महत्व रखती है। यही योग का लक्ष्य भी है। यज्ञ में स्विष्ट कृदाहुति में भी सभी कामनाओं को पूर्ण करने की प्रार्थना की गई है। यह महत्वपूर्ण है कि महर्षि दयानन्द ने योग को सर्वसामान्य के लिए सरल बनाया है। योगदर्शन का अध्ययन सन्ध्या करने वाले उपासक को लाभ पहुंचाता है। इससे योगाभ्यासी को साधना के अनेक पक्षों व उपायों का महत्व ज्ञात होता है। सन्ध्या को निरन्तर करने से मनुष्य समाधि की ओर अग्रसर होता है। ईश्वर प्राप्ति का मार्ग भी यही है। अतः यज्ञ एवं योग ईश्वर प्राप्ति के साधन हैं। दोनों परस्पर पूरक हैं और जीवन के अत्यावश्यक हैं। इन्हें करने से ही मनुष्य जीवन सार्थक व सफल होता है।

विशेष सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल, का राष्ट्रीय शिविर दिनांक 27 मई से 3 जून 2018 तक इलाहाबाद में आयोजित किया जा रहा है। शिविर की आयोजिका ने अनुरोध किया है कि अधिक से अधिक वीरांगनाएं शिविर में पहुंचकर इस अवसर का लाभ उठायें।

संचालिका– **मृदुला चौहान**

मो. 9810702760

चापेकर बन्धु

—स्वामी यतीश्वरानन्द जी

अप्रैल 1898 में बाल गंगाधर 'तिलक' येरावदा जेल में एक कैदी से मिलने पहुँचे और उस कैदी को 'गीता' भेंट की। मातृभूमि के लिये सर्वस्व बलिदान करने वालों के लिये यह लोकमान्य का उपहार था। 18 अप्रैल 1898 को वही गीता पढ़ते हुए दामोदर हरि चापेकर फाँसी के तख्ते तक पहुँचे तथा मातृभूमि की आन के लिये मन्द मुस्कान लिये फाँसी के फंदे पर झूल गये। ब्रिटिश गुलामी की बेडियों में जकड़े, कभी विश्व गुरु और सोने की चिड़िया जैसे अलंकरणों से शोभित भारतवर्ष के लिये यह एक आधुनिक क्रान्ति–युग की शुरूआत थी। जिसमें युवाओं ने प्रार्थना पत्रों और अहिंसक जनान्दोलनों के बजाय हथियार उठाने का फैसला किया तथा हँसते–हँसते जेल और फाँसी को चुना। 'शठे शाठ्यम समाचरेत्' की नीति पर आधारित इस बलिदान के मार्ग पर चलने वालों में 1857 की क्रान्ति के बाद, दामोदर पंत चापेकर पहले क्रान्तिकारियों में थे।

दामोदर का जन्म 24 जून 1869 को पूना चिंचवड गाँव में प्रसिद्ध परन्तु निर्धन कीर्तनकार हरिपंत चापेकर के घर हुआ था। इसके दो छोटे भाई बालकृष्ण व वासुदेव थे। महर्षि पटवर्धन तथा लोकमान्य तिलक दामोदर के आदर्श थे। तिलक की प्रेरणा से दामोदर ने युवाओं का एक दल 'व्यायाम मण्डल' बनाया जहाँ ब्रिटिश सत्ता से त्रस्त देश की राजनीतिक स्थिति पर चिन्तन किया जाता था। 1894 से तीनों चापेकर बन्धु शिवाजी व गणपति समारोहों का प्रतिवर्ष पूना में आयोजन किया करते थे। इन समारोहों में ये कहा करते कि केवल शिवाजी की कथा दोहराने से आजादी नहीं मिलेगी। आजादी के लिये तथा गाय और धर्म की रक्षा के लिये हथियार उठाने

होंगे। बम्बई में महारानी विक्टोरिया की मूर्ति पर कालिख पोतकर तथा जूतों की माला पहनाकर दामोदर ने ही ब्रिटिश राज के प्रति नये भारत का रोष प्रकट किया था।

1855 में चीन के युनान प्रान्त से शुरू 'तीसरी प्लेग महामारी' 1896 तक किसी तरह पूना आ पहुंची थी। फरवरी 1897 के आखिर तक इस ब्यूबोनिक प्लेग के कारण शहर की आधी से ज्यादा आबादी दूर पलायन कर गई थी। 08 मार्च 1897 को एक आई.सी.एस. अधिकारी वाल्टर चार्ल्स रैंड की अध्यक्षता में एक 'विशेष प्लेग समिति' का गठन किया गया। इस समिति ने 13 मार्च 1897 को मेजर पैगट के नेतृत्व में 893 सैनिकों को जबरन घरों में घुसकर लोगों की जाँच करने, रोगियों का सामान नष्ट करने, व शहर की सीमाएँ सील करने के लिये अधिकृत किया। तिलक व अगरकर का आरोप था कि सैनिकों ने घरों में पूजा स्थलों को दूषित किया, मूर्तियां तोडी, स्त्रियों के सम्मान की परवाह नहीं की तथा सामान्य जनता की बेइज्जती की। बाद में गोपाल कृष्ण गोखले ने आरोप लगाया कि सैनिकों ने दो जगह बलात्कार किये जिस कारण एक स्त्री ने आत्महत्या कर ली। अत्याचार की इन घटनाओं से उद्वेलित होकर चापेकर बन्धुओं

ने संकल्प लिया कि वे देशवासियों के अपमान का बदला लेंगे।

22 जून 1897 को पूना के गवर्नमेंट हाउस में महारानी विक्टोरिया के राज्यारोहण की हीरक जयन्ती मनाई जा रही थी। इस अवसर पर अन्य अंग्रेज अधिकारियों के साथ रैंड तथा लेफ्टिनेंट आयर्स्ट भी उत्सव में शामिल हुए। शाम के समय दामोदर और बालकृष्ण अपने मित्र गोविन्द विनायक रानाडे के साथ एक पीली इमारत के पास से अंग्रेज अधिकारियों के निकलने की प्रतीक्षा करने लगे। तीनों क्रान्तिकारियों के पास तलवारें व पिस्तौल थी। दामोदर ने एक कुल्हाड़ी भी पास ही छिपा दी थी। कोई साढ़े चार घंटे इंतजार के बाद जब दोनों अधिकारी अपनी–अपनी बग्गियों पर सवार होकर निकले तो दामोदर कुछ कदम भागकर रैंड की बग्गी में पीछे से चढ़ गये और उसे गोली मार दी। उधर बालकृष्ण ने आयर्स्ट पर गोली चला दी। आयर्स्ट की मौके पर ही मौत हो गई जबकि रैंड 03 जुलाई 1897 को अस्पताल में मर गया। तीनों क्रान्तिकारी फरार हो गये। इस अचानक वार से सकते में आई सरकार ने फरार आरोपियों का सुराग देने के लिये बीस हजार रुपये का ईनाम घोषित किया। इस रकम के लालच में चापेकर बन्धुओं के क्लब के सदस्य गणेश शंकर द्रविड व रामशंकर द्रविड ने पुलिस अधीक्षक ब्रुइन को चापेकर बन्धुओं का सुराग दे दिया। पुलिस ने दामोदर को गिरफ्तार कर लिया। 08 अक्टूबर 1897 को दर्ज अपने बयान में दामोदर ने प्लेग अधिकारियों द्वारा भारतीयों के पूजा–स्थलों, मूर्तियों व स्त्रियों के अपमान को हत्या का कारण बताया। 18 अप्रैल 1898 को दामोदर को फाँसी दे दी गई। जब बालकृष्ण को पता लगा कि पुलिस उनके सगे सम्बन्धियों को सता रही है तो उन्होंने स्वयं थाने में आत्मसमर्पण कर दिया। तब वासुदेव चापेकर और विनायक रानाडे ने दोनों द्रविड भाईयों की हत्या कर उन्हें उनकी गद्दारी का वास्तविक ईनाम दिया। 08 फरवरी 1899 की रात की इस घटना के कुछ दिन बाद ये दोनों भी पकड़े गये। सबको फाँसी की सजा हुई। वासुदेव को 08 मई, विनायक रानाडे को 10 मई तथा बालकृष्ण को 12 मई 1897 को येरावदा जेल में फाँसी दे दी गई। तिलक के लेखों और दामोदर चापेकर के बयान को आधार बनाकर अदालत ने तिलक को भी अठारह महीने की कैद की सजा सुनाई।

चापेकर बन्धुओं ने निर्धन और संगीत कला के धनी अपने परिवार का नाम भारतवर्ष के इतिहास में अमर कर दिया। उस समय अमेरिका के 'न्यूयार्क टाइम्स' आस्ट्रेलिया के' सिडनी मार्निंग हेराल्ड' व लन्दन के 'टाइम्स' जैसे अखबारों ने इसे भारत में एक नई राजनैतिक चेतना की शुरूआत की संज्ञा दी।

व्यास आश्रम सप्त सरोवर समीप साधुबेला हरिद्वार का 65वाँ वार्षिक उत्सव 1 अप्रैल से 5 अप्रैल 2018 तक आयोजित किया जा रहा है इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ एवं योग साधना शिविर में आप सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक – **गिरधारी लाल चन्दवानी**

मो. 9012010499

EAT VEGETARIAN, SPREAD VEGETARIAN

Mrs. Monica Khosla

Now a days large no. of people are drawn to vegetarianism. Some just want to live longer, healthier lives. Others have made the switch to preserve Earth's natural resources and their love for animals.

There have been an abundance of scientific research which shows the health and environmental benefits of a plant-based diet. A vegetarian diet reduces the risk for chronic degenerative diseases such as obesity, coronary artery disease, high blood pressure, diabetes and certain types of cancer including colon, breast, prostate, stomach, lung and esophageal cancer.

A study conducted from 1986 to 1992 by Dean Ornish, MD, president and director of the Preventive Medicine Research Institute in Sausalito, California, found that overweight people who followed a low-fat, vegetarian diet lost an average of 24 pounds in the first year and kept off that weight 5 years later. They lost the weight without counting calories or carbs and without measuring portions or feeling hungry.

Residents of Okinawa, Japan, have the longest life expectancy of any Japanese and likely the longest life expectancy of anyone in the world, according to a 30-year study of more than 600 Okinawan centenarians. Their secret: a low-calorie diet of unrefined complex carbohydrates, fiber-rich fruits and vegetables, and soy.

Few reasons to switch to vegetarian diet are:

You'll spare animals. Many vegetarian give up meat because of their concern for animals. Ten billion animals are slaughtered for human consumption each year. And, unlike the farms of yesteryear where animals roamed freely, today animals are factory farmed: crammed into cages where they can barely move and fed a diet tainted with pesticides and antibiotics.

You'll live a lot longer. vegetarians live about seven years longer, and vegans (who eat no animal products) about 15 years longer than meat eaters, according to a study from Loma Linda University.

You'll reduce your risk of cancer. The National Cancer Institute says that women who eat meat every day are nearly four times more likely to get breast cancer than those who don't. Vegetarians immune systems are more effective in killing off tumor cells than meat eaters. Students have also found a plant-based diet helps protect against prostate, colon and skin cancers.

You'll be more "regular." Eating a lot of vegetables necessarily means consuming fiber, which pushes waste out of the body. Non-Veg. food contains no fiber and results in constipation, hemorrhoids and spastic colon.

You'll add color to your plate. Meat, chicken and fish tend to come in boring shades of brown and beige, but fruits and vegetables come in all colors of the rainbow. Eating a variety of naturally occurring substances boost immunity and prevent a range of illnesses. You'll be clear conscience. You will feel good inside about your decision to remain "meatless." Torturing and Killing an animal is a step towards brutality. Animals have to go through lost of pain and trauma. So we, human beings should realize their pain and fear of these speechless creatures and stop taking Non-Veg. Diet.

There are many more reasons for quitting non-veg. diet and to for veg. diet. The list can be endless.

देवी अंजना की अग्नि परीक्षा

— श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम

देवी अंजना की प्रतीक्षा की घड़ियों में चित्त की उद्विग्नता का आंकलन सम्भव नहीं है। पर रात्री के तीसरे प्रहर में जब वह निराशा का आँचल पकड़ने लगी थी, अपने समीप पवनजी को पाकर उसके हर्षातिरेक की भी सीमा न रही। पवन वहाँ दो दिन रहे। जब वे जाने लगे तो इस बीच गर्भ स्थिति का निश्चय जान देवी अंजना ने बड़ी भयार्त वाणी से विनय की— स्वामि! आप अपनी माता जी या पिताजी से अवश्य मिलते जावें। पता नहीं आपको उधर कितना समय लगे। किन्तु संकोच वश पवन जी ने इस पर ध्यान नहीं दिया, उसके गम्भीर परिणाम की ओर उनका ध्यान ही नहीं जा सका। सोचा, में शीघ्र ही आ जाऊँगा, फिर अपनी अँगूठी देते हुए कहा कि कोई कुछ पूछे तो अँगूठी बताकर मेरे आने के विषय में बता देना।

पवनजी वहाँ जाकर और अधिक उलझ गये। विरोध अधिक बढ़ जाने से उन्हें अनिच्छित दमन कार्य में प्रवृत्त होना पड़ा। इधर अंजना देवी के गर्भ चिन्ह प्रकट होने लगे। महारानी केतुमती को इसकी सूचना मिलते ही वे देवी अंजना के भवन पहुँची। अंजना देवी ने अँगूठी दिखाकर अपनी सास को समस्त वृत्त निवेदन किया, किन्तु उसे पुत्र के इस प्रकार आने और चुपचाप चले जाने की बात में विश्वास नहीं हुआ। 'ईश्वरेच्छा वलीयसि' निरपराध देवी अंजना को भवन से अपमान पूर्वक निर्वासित कर दिया गया। दुःख की मारी अंजना देवी माता—पिता के द्वार पहुँची, किन्तु वहाँ भी 'प्रवेश वर्जित' का नोटिस लगा पाया।

"राष्ट्रे वयं जागृयाम पुरोहिताः" इस परम पवित्र वेद वचन के मूर्तिमन्त प्रतीक महर्षि अगस्त्य प्रत्येक गतिविधि का परिज्ञान रखते थे। उन्हें इस सम्पूर्ण स्थिति का ज्ञान होते ही, देवी अंजना की सुरक्षा का उन्होंने समुचित प्रबन्ध कर दिया। जिस अनजान राह में मात्र अपनी चिर सखी बासन्ती के साथ अंजना देवी आँसुओं में नहाती बढ़ी चली जा रही थी, कुछ दूर आगे ही उसे एक वयोवृद्ध सज्जन मिले। उनके द्वारा सान्त्वना के दो शब्द सुनकर उस दुखियारी को बड़ा ढाढस मिला और जब उसे महर्षि अगस्त्य की व्यवस्था का ज्ञान कराया गया तो वह पूर्ण निश्चिन्तता से उस वृद्ध पुरुष के साथ होली। समीप के एक घने जंगल में एक सुन्दर आश्रम था, जहाँ देवी अंजना और उसकी सखी के आवास की सम्पूर्ण व्यवस्था थी। देवी अंजना ने यहाँ पहुँचकर सुख की साँस ली। उसे लगा जैसे ऋषि कृपा से उसकी दुःख रात्रि कट चुकी है।

युवराज पवन जी ने जब अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त कर राजधानी में प्रवेश किया तो अंजना—निर्वासन के समाचार मिलते ही उन पर तुषारपात हो गया। दौड़े—दौड़े वे महेन्द्रपुर गये, पर वहाँ से भी निराशा लौटने पर पवन की दशा पागलों जैसी हो गई, वे राज्य के एक—एक कौने में अंजना की खोज में निकल पड़े।

शुद्ध हनुमच्चरित से साभार

प्रिय बन्धुओं आपसे अनुरोध है कि पवमान पत्रिका का वार्षिक शुल्क अविलम्ब जमा करना सुनिश्चित करें। यदि आपको किसी महीने की पत्रिका प्राप्त न हुई हो तो कृपया श्री एस.के. गुप्ता जी से उनके मो. संख्या 9808700466 पर संपर्क करें, आपको पवमान पत्रिका पुनः भेज दी जायेगी।

धर्म का चौथा लक्षण अस्तेय

— डा० प्रियंवदा वेदभारती

आदरणीय बन्धुओ! एवं मातृशक्ति!

जीवन में धारण करने योग्य चौथा गुण है अस्तेय। संस्कृत भाषा में चोर को स्तेन भी कहते हैं। स्तेन का जो कर्म वह स्तेय और स्तेय का न होना अस्तेय कहाता है। इस प्रकार अस्तेय का अर्थ हुआ चोरी न करना। मनुस्मृति के टीकाकार अस्तेय की व्याख्या करते हुये लिखते है— 'अन्यायेन परधनादिग्रहणं स्तेयम्, तद्भिन्नमस्तेयम्' अर्थात् अन्याय से दूसरे का धन न लेना ही अस्तेय है। बन्धुओ! यह चोरी केवल शरीर से ही नहीं की जाती, मन से भी की जाती है तभी दर्शनकारों ने कहा— 'स्तेनं मनः' अर्थात् मन भी चोर होता है। जब हम किसी के धन, सम्पत्ति, (सौन्दर्य) महल आदि को देखकर उसे येन केन प्रकारेण प्राप्त करने की मन में ठान लेते हैं, उसे हथियाने की योजना बनाते हैं तब वह मानसिक चोरी होती है। इसी प्रकार शरीर और मन के साथ—साथ शास्त्रों में वाणी को भी चोर कहा है। जब किसी के धन आदि प्राप्त करने की इच्छा लेकर उस व्यक्ति के विषय में वाणी से विष वमन किया जाता है, बन्दूक आदि दिखाकर डराया धमकाया जाता है, अनुचित दबाव डाला जाता है, उस समय वह मनुष्य वाचिक चोरी करने में तल्लीन होता है। और जब वहाँ शरीर का भी सहयोग प्राप्त हो जाये अर्थात् उस व्यक्ति को क्षत—विक्षत लहूलुहान कर, अपने से मुकाबले के अयोग्य बनाकर बलपूर्वक उसके परिसर में, घर में प्रवेश कर सम्पत्ति का हरण किया जाता है वह शारीरिक चोरी कहाती है। इन तीनों प्रकारों की चोरियों से बचना ही धर्म है।

बन्धुओ! इस अस्तेय पर गम्भीरता से विचार करे तो यह बिन्दु भी सामने आयेगा कि प्रभु ने हमें पुरुषार्थी बनकर सत्याचरण से धन कमाने का आदेश दिया है ' मा गृधः कस्यस्विद्धनम्' किसी के धन को जबर्दस्ती लेने का निषेध किया है। चोरी केवल दूसरों के धन को उनकी आज्ञा के बिना ले लेने पर ही हो ऐसी बात नहीं, आजकल चोरी के अनेक रूप उभरकर सामने आ रहे हैं। टैक्स की चोरी, रेल भाड़े की चोरी, मिल—मजदूरों के बोनस की चोरी, परिग्रह से माल को छिपाकर संग्रह करने और जरूरतमन्द जनता को उससे व×चत करने की चोरी, किसी की उन्नति में बाधक बनकर उससे अधिकार छीनने की चोरी, भोली—भाली जनता को भ्रमजाल में फँसाने के लिये सत्यसनातन वेदों के सही ज्ञान को छिपाने की चोरी आदि कितनी ही चोरियाँ है जो दिन—रात होती रहती हैं। मान्यवर! इतनी सूक्ष्मता में चिन्तन करें तो हममे से प्रत्येक व्यक्ति आज किसी न किसी प्रकार के स्तेय में लिप्त है। स्तेय में लिप्त रहने वाले व्यक्ति का उत्थान सम्भव नहीं, अतः इस स्तेयरूपी पाप से बचने का प्रयास करना चाहिये। मनुष्य के जीवन में अस्तेय का कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है यह इसी बात से समझा जा सकता है कि जहाँ पात×जल योगदर्शन में पाँच यमों में इसे स्थान देकर परमात्मा की प्राप्ति में सहायक बताया गया वहीं मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षणों में इसे स्थान दिया। सार यह है कि प्रत्येक आत्मोन्नति अभिलाषी व्यक्ति को अस्तेय व्रत की साधना अवश्य करनी चाहिये। धन्यवाद।

ओ३म्

वैदिक साधन आश्रम

तपोवन, नालापानी, देहरादून

द्वारा आयोजित

ग्रीष्मोत्सव

एवं

स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह

बुद्धवार, 9 मई 2018 से

रविवार, 13 मई 2018 तक

आर्य समाज के संस्थापक,
वेदों के उद्धारक एवं युग प्रवर्तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

(1825-1883)

आश्रम सोसाइटी के सदस्यगण : दर्शन कुमार अग्निहोत्री, ई॰ प्रेम प्रकाश शर्मा, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, मंजीत सिंह, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ॰ शशि वर्मा, मनीष बावा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, विजय कुमार, रामभज मदान, विनीश आहुजा।

कार्यक्रम के प्रमुख सहयोगी : रणजीत राय कपूर, अशोक वर्मा, जीतेन्द्र तोमर, रमेश चन्द, सुशील कुमार भाटिया।

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com   Web : www.vaidicsadhanashramdehradun.com

दिनांक 09 मई से 13 मई 2018 तक

आयोजित ग्रीष्मोत्सव के कार्यक्रमों का विवरण

योग-साधना निदेशक

स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती

यज्ञ की ब्रह्मा

डॉ. नन्दिता चतुर्वेदा

समापन समारोह के	:	आचार्य बाल कृष्ण जी, पंतजलि योगपीठ, हरिद्वार
अतिथिगण	:	महाशय धर्मपाल जी, सुप्रसिद्ध उद्योगपति एमडीएच, नई दिल्ली मा. श्री उमेश शर्मा (काऊ) विधायक
प्रवचनकर्ता	:	आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य
वेद पाठ	:	पाणिनीय कन्या महाविद्यालय वाराणसी की ब्रह्मचारिणियों द्वारा
यज्ञ एवं कार्यक्रम संयोजक	:	श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी हरिद्वार, डॉ. अनिल आर्य एवं सुश्री सुनीता जी, नई दिल्ली
यज्ञ के व्यवस्थापक	:	पंडित सूरतराम शर्मा जी
भजनोपदेशक	:	पं. सत्यपाल पथिक, पं. रुवेल सिंह आर्यवीर एवं पं. सुचित नारंग

बुधवार 09 मई से रविवार 13 मई 2018 तक प्रतिदिन

योग साधना : प्रातः 5.00 बजे से 6.00 बजे तक	यज्ञ एवं संध्या : सायं 3.30 बजे से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ : प्रातः 6.30 बजे से 8.30 बजे तक	भजन एवं प्रवचन : रात्रि 7.30 बजे से 9.30 बजे तक

सोमवार 7 मई - मंगलवार 8 मई 2018

शोभायात्रा : प्रातः 8.00 बजे से 12.00 बजे तक

बुधवार 9 मई 2018

ध्वजारोहण	:	प्रातः 9.00 बजे
यज्ञ के यजमान	:	श्री विजय सचदेवा एवं परिवार
भजन एवं प्रवचन	:	प्रातः 10.00 बजे से 1.00 बजे एवं रात्रि 7.30 बजे से 9.30 बजे तक
प्रवचन विषय	:	प्रात : दान का दार्शनिक महत्व (मुख्य अतिथि : डॉ. वेद प्रकाश आर्य) सांय : विश्वशान्ति का आधार वेदज्ञान (मुख्य अतिथि : डॉ. दिनेश शर्मा जी)

गुरुवार 10 मई 2018

युवा सम्मेलन	:	प्रातः 10.00 बजे से 1.00 बजे एवं भजन प्रवचन रात्रि 7.30 बजे 9.30 बजे तक
प्रवचन विषय	:	प्रात : विद्यार्थी एवं चरित्र निर्माण (मुख्य अतिथि : डॉ. नवदीप जी)
	:	सांय : वेदानुकूल कर्म सिद्धान्त (मुख्य अतिथि : श्री जयराज जी)

शुक्रवार 11 मई 2018

महिला सम्मेलन	:	प्रातः 10.00 बजे से 1.00 बजे एवं भजन प्रवचन रात्रि 7.30 बजे 9.30 बजे तक
प्रवचन विषय	:	प्रात : सन्तान की चारित्रिक उन्नति के व्यवहारिक उपाय (मुख्य अतिथि : डॉ. अन्नपूर्णा जी)
	:	सांय : आर्यसमाज की पूजापद्धति (मुख्य अतिथि : श्री योगराज अरोड़ा जी)

शनिवार 12 मई 2018

कार्यक्रम	: प्रात: 6 बजे से 1 बजे तक तपोभूमि में एवं भजन संध्या सांय 7.30 बजे से 9.30 बजे तक
प्रवचन विषय	: प्रात : सुखी जीवन का आधार योग (मुख्य अतिथि : स्वामी यतीश्वरानन्द जी)
भजन संध्या	: श्रीमती मीनाक्षी पंवार एवं पाणिनीय कन्या महाविद्यालय वाराणसी की ब्रह्मचारिणियां (मुख्य अतिथि : श्री प्रदीप दत्ता जी)

रविवार 13 मई 2018

स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह

मंच संचालन	: सुश्री सुनीता जी एवं डॉ. अनिल आर्य जी
दीप प्रज्वलन	: मुख्य अतिथि एवं विशिष्ठ अतिथियों द्वारा
अतिथि स्वागत	: इ. प्रेम प्रकाश शर्मा, सचिव, तपोवन आश्रम द्वारा
स्वागत गीत	: तपोवन विद्या निकेतन के छात्र-छात्राओं द्वारा
भजन	: पं. सत्यपाल पथिक, पं. रूवेल सिंह आर्यवीर एवं पं. सुचित नारंग
प्रवचन	: डॉ. नन्दिता चतुर्वेदा, आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, आचार्य आशीष जी एवं डॉ. अन्नपूर्णा जी
सांस्कृतिक कार्यक्रम	: पाणिनीय कन्या महाविद्यालय वाराणसी की ब्रह्मचारिणियों तथा द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरूकुल, देहरादून की ब्रह्मचारिणियों द्वारा भजन प्रस्तुति तथा तपोवन विद्या निकेतन, नालापानी की छात्राओं द्वारा गढ़वाली नृत्य एवं अन्य कार्यक्रम
सम्मान	: अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा विद्वानों का वेद मित्र सम्मान, आर्य श्रेष्ठी सम्मान, संगीत शिरोमणि सम्मान एवं वेद श्री सम्मान द्वारा अभिनन्दन
उद्‌बोधन	: आचार्य बालकृष्ण जी, महाशय धर्मपाल जी एवं श्री उमेश शर्मा (काऊ) तथा अन्य विद्वतजन
धन्यवाद ज्ञापन	: श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, अध्यक्ष तपोवन आश्रम
ऋषि लंगर	: अपराह्न 1.30 बजे से

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून

आश्रम द्वारा अनेक जनोपयोगी मार्गदर्शक पुस्तकों का लेखन एवं प्रकाशन कराया गया है तथा प्रतिमाह ''पवमान'' पत्रिका का प्रकाशन भी किया जाता है। आश्रम द्वारा गौशाला का संचालन किया जा रहा है। आश्रम द्वारा अनेक वर्षों से तपोवन विद्या निकेतन जूनियर हाई स्कूल का सफल संचालन किया जा रहा है। आश्रम द्वारा नवनिर्मित भवन के तपोवन आरोग्यधाम चिकित्सालय में होम्योपैथिक, ऐलोपैथिक, आयुर्वेदिक, दन्त चिकित्सा एवं फिजियोथैरेपी चिकित्सा चलायी जा रही है। इस वर्ष 9 फरवरी से 1 मार्च 2018 तक स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी के मार्गदर्शन में चतुर्वेद परायण यज्ञ एवं योग प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया है।

सभी धर्माभिलाषी, आर्य परिवारों एवं आश्रम के शुभ चिन्तकों से आश्रम को पूर्ण सहयोग निमित्त सादर अनुरोध है। आश्रम को दिया गया दान आयकर की धारा 80 जी के अनुसार कर मुक्त है। दान राशि निम्न बैंक खाते में जमा करायी जा सकती है।

वैदिक साधन आश्रम, देहरादून ओ.बी.सी. खाता सं. : 00022010029560

बैंक में राशि जमा कराने के पश्चात् आश्रम को तुरन्त ई–मेल (vaidicsadanashram88@gmail.com) अथवा दूरभाष नं. 0135–2787001 पर सूचित करने पर रसीद भेज दी जायेगी। तपोवन आश्रम के सभी प्रकल्प सुचारू रूप से चलते रहें इसके लिए दानी महानुभाव स्थाई रूप से सहयोग राशि प्रति मास / प्रति वर्ष भेज कर कृतार्थ करें, ऐसा हमारा अनुरोध है।

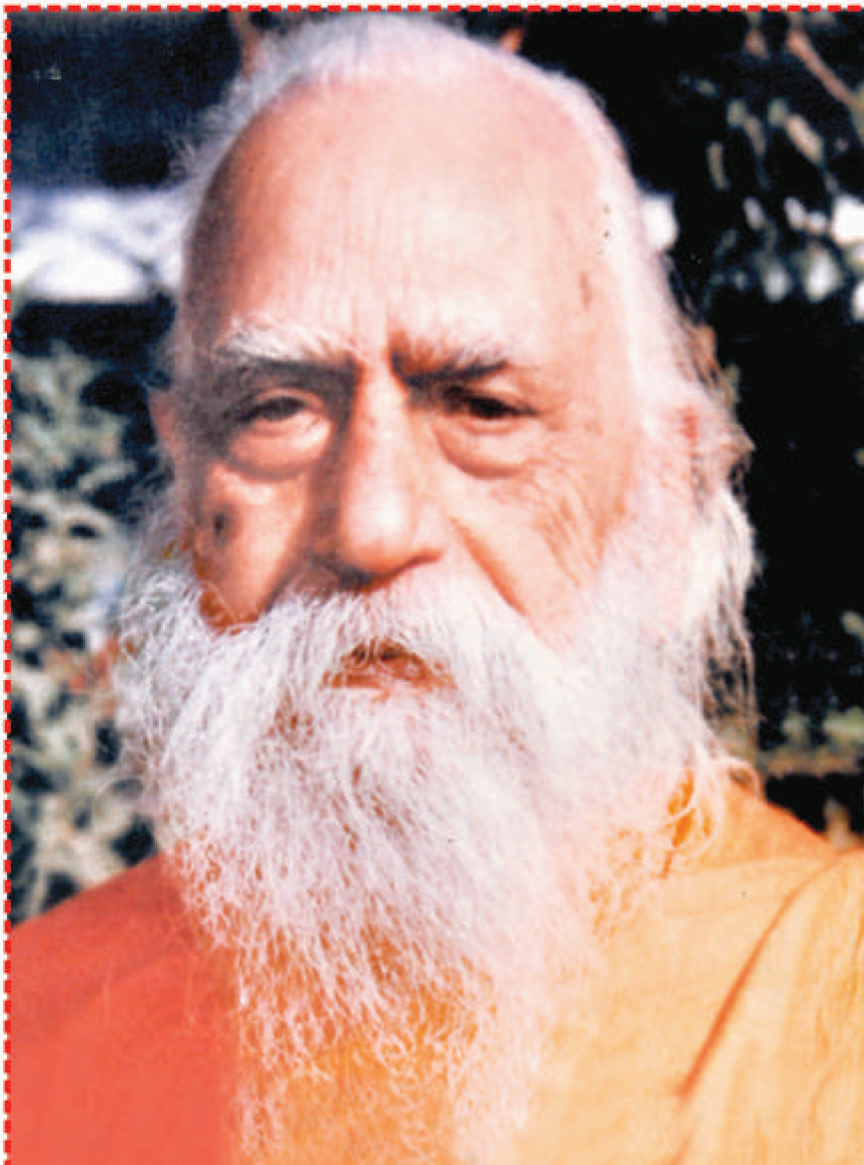

विद्यामार्तण्ड स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

परमपिता परमात्मा बड़ा दयालु है

—स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

परमपिता परमात्मा बड़ा दयालु है। कृपा सिन्धु है हम जीवों को प्रेरणायें देकर सद्कर्मो में लगा देते हैं। सौभाग्यशाली आत्मायें ही उस देव प्रेरणाओं को पहचान कर तदनुसार आचरण कर कर्म करने में समर्थ होते हैं। सन्तों के, योगियों के, विद्वानों के संग रहने से, उनके ज्ञान पूर्ण उपदेशों को सुनकर उनके कहने के अनुसार दिनचर्या बनाकर अपने व्यवहार में लाने से प्रभु की प्रेरणा को समझने की योग्यता ईश कृपा से प्राप्त होती है। दया सिन्धु परमदेव की कृपा से मेरे जीवन में कुछ ऐसा ही घटा है।

अप्रैल 1994 में मै वानप्रस्थ लेकर सीधा तपोवन आ गया और निचले तपोवन की ऊपर वाली कुटिया में ऐकान्त साधना में रत हो गया। प्रतिदिन अपना यज्ञ वहीं पर किया करता था और किसी भी जन से नहीं मिलता था। सेवक राममूर्ति जी दूध व भोजन की व्यवस्था बड़ी श्रद्धापूर्वक करते थे। एक दिन एक पत्रक मेरे कमरे के बाहर छोड़ गये की लाला लोकनाथ जी नीचे आये हुए हैं, और वे भी मौन है। इधर मेरे मन में बार—बार भाव उठ रहा था कि 24 लाख गायत्री की आहुती यज्ञ देव को प्रदान करें। मैंने लाला जी को पत्र लिखा की मेरे मन में प्रेरणा हो रही है कृपया आप मेरी सहायता करे। लाला जी ने तुरन्त लिखकर भेजा कि आप अपनी बात विस्तार से करें तब कुछ समाधान हो सकता है। आपके लिए मेरा मौन खुला हुआ है। जब आप को समय मिले तब आ जाओ।

लाला जी एक अच्छे साधक थे महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज के प्रिय शिष्यों में से एक थे। उन्होंने मुझे समझाया ये ईश्वर प्रेरणा है और यज्ञ की रूपरेखा बना दी, कितनी वेदी बनानी है, और कितनी सामग्री घी, समीधा लगेगी। पहले गुगल की आहुती एक माला की फिर एक माला तिल आहुती देना, शेष सामान्य सामग्री की आहुति देना सब समझाया। यज्ञ किया गया सुन्दर व सफल यज्ञ सम्पन्न हुआ।

उसके पश्चात् 2005 में बड़े यज्ञ की प्रेरणा हुई कि सवा करोड़ गायत्री का यज्ञ मंझावली में किया जाऐ। वह भी अद्भुत था। सहयोगी अनायास जुट गये और निवेदन किया गया कि पैसे की अपील किसी से भी नहीं करनी है।

आचार्य जी को भी कह दिया गया कि पत्रिका में नहीं लिखाना है कि हवन के लिए धन देकर पुण्य अर्जन करें। ईश लोगों को प्रेरणा देकर भेजेंगे, ये उन्ही का कार्य है। नही भी होगा तो हम पत्तो से आहुति देंगे, कोई नहीं आयेगा तो छात्र तो हमारे ही है। इस प्रकार गुरूकुल मंझावली में सवा करोड़ गायत्री एवं चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन सवा पांच महीने तक चला और ईश कृपा से कोई भी किसी भी प्रकार की कमी नहीं हुई और चार लाख रुपये बचे। जिससे ऊपरी तपोवन की चार दीवारी का कार्य किया गया, और प्रभु कृपा ने अन्य सहयोगी जुटा दिये और दीवार का निर्माण सहजता से पूर्ण हो गया। गुरुकुल मंझावली में आयोजित यज्ञ के दिन सर्दी में रजाइयाँ, भोजन, दुग्ध आदि की सुन्दर व्यवस्था हो गई और ब्रह्मा जी को सवा लाख की दक्षिणा दी गई। वेदपाठी सस्वर वेद—पाठ के लिए दक्षिण से बुलाये गये। प्रातः सांय योगसाधना भी होती थी। 80 साधक स्थायी रूप से वहीं पर रहे। सात बड़ी—बड़ी वेदियाँ बनी, सभी फूस की छाल से आच्छादित थी। लम्बी अवधी के इस यज्ञ से अनेक साधकों का जीवन ही बदल गया। सभी लोगों ने इसे खूब पसंद किया। आर्य जगत में खूब चर्चा हुई। ये सभी प्रभु प्रेरणा का परिणाम था।

फिर तो ये प्रसारण ईश कृपा से चल पड़ा। विभिन्न स्थानों पर यज्ञ परम्परा की विधियाँ मिलती गई। और यज्ञ होते गये। 2012 से ऊपरी तपोवन में चारो वेदों का यज्ञ तथा गायत्री अनुष्ठान चल रहा है। 2014 में पुनः सवा करोड़ गायत्री अनुष्ठान व चतुर्वेद ब्रह्म परायण यज्ञ किया गया जिसमें लगभग 2 करोड़ रुपये व्यय हुए। प्रभु कृपा से सब जुटाया।

इसे मैं ईश्वर कृपा मानता हूँ। 1980 से 1994 दिल्ली गौतम नगर गुरुकुल में चतुर्वेद का मुख्य यजमान रहकर स्वामी दीक्षानन्द के ब्रह्मत्व में प्रवचन उपदेश सुनकर मेरी वानप्रस्थ भूमिका बन चुकी थी। और सर्विस से त्यागपत्र देकर गृह त्याग कर दिया और वानप्रस्थ की दिक्षा ले ली। 11 वर्ष वानप्रस्थ में रहकर 2005 में स्वामी विवेकानन्द गुरुकुल प्रभात आश्रम के संचालक जी से गुरुकुल में ही सन्यास की दीक्षा ली। मेरे दीक्षा गुरु स्वामी विवेकानन्द जी सच्चे योग साधक तपस्वी सरल, दयालु, विद्वान, आर्ष पाठ विधि को शतशः अपनाकर चलते हैं। मैं उनका आभारी हूँ। उन्होंने मुझे साधना पथ दिया व प्रेरित किया।

उसी प्रेरणा श्रृंखला के अन्तर्गत यहाँ तपोवन ऊपरी भाग में ये छटा चतुर्वेद ब्रह्म परायण यज्ञ एवं योग साधना का शिविर 2018 में 9 फरवरी से 1 मार्च तक चला। इस शिविर में प्रायः शिवरार्थी नये अधिक थे और पुराने कम थे। शिवरार्थियों ने अपने–अपने सामर्थ्य के अनुसार अनुशासित रहकर साधना करी उनका तप आदरणीय है। प्रभु उन्हें और सामर्थ्य दे। इस बार यज्ञाग्नी बहुत अच्छी जली। स्वामी विशुद्धानन्द जी का तप सराहनीय है। प्रभु देव उन्हे स्वास्थ्य प्रदान करें तथा उनकी सफल साधना हो। आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी के सहयोग से सब सुन्दर व्यवस्था हो गई आयोजन सफल बनाने में कुछ साधको का विशेष सहयोग रहा है जैसे हरीश मुनि, ओम मुनि, आत्म मुनि व ब्रह्मचारी सुनील आर्य और जय प्रकाश जी का सहयोग रहा है। प्रभु इन सभी को शक्ति भक्ति सुमति दें। ब्रह्मचारी सुनील आर्य व शैलेन्द्र ने भी हमारी खूब सेवा करी व वेद पाठियों ने भी, प्रभु इनका भी मंगल करें और प्रभु प्रेम विकसित करें। गुरुकुल गौतम नगर के वेद पाठियों का खूब धन्यवाद। खूब अच्छी गति से वेदपाठ किया। आदरणीय ब्रह्मापद पर आसीन आचार्य गौतम जी ने भी मंत्रों की व्याख्या युक्ति पूर्ण विधि से करी। सब उनके वक्तृत्व से संतृप्त है तथा उनका खूब आभार व्यक्त करता हूँ तथा प्रभु से स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ।

ये पवित्र यज्ञ जन–जन के लिए कल्याणकारी हो प्रभु ये सब सामग्री घृत प्रभुदेव की दात है। उसकी पूजा के लिए उसी की प्रेरणा से अर्पित है। हे देव अन्त में याचना करते है कि हम सब अल्पज्ञ है प्रभु हमें ज्ञान दे, शक्ति दे और आपकी प्यारी–प्यारी भक्ति दे, प्रभु हमें जन्म मरण के बन्धन से दूर कर परम सुख मोक्ष की प्राप्ति करायें। देव सबका मंगल, सबका भला, सबका कल्याण हो देव। इति ओम्

तपोवन श्रेष्ठ साधनास्थली

–स्वामी शिवानन्द

मैं दिनांक 8–02–2018 की सांयकाल सहयोगियों के साथ तपोवन नालापानी में पहुँच गया। प्रथम दृष्टया ऐसा प्रभावित हुआ कि सब कुछ मस्तिष्क से दूर होकर यही विचार बना कि किसी कोने में बैठकर ध्यान के अतिरिक्त यहाँ और कुछ नहीं करना, किन्तु दिनचर्या तो शिविर के नियमानुकूल ही रखनी होती है, सभी स्तर के साधक होते हैं, जबकि मेरी स्थिति एकान्त अभ्यास की बन गयी है। अतः सामूहिकता में वह काम नहीं ले पाया। जबकि साधना की दृष्टि से यह स्थान बहुत उपयुक्त है, और स्वामी जी की शिविर की व्यवस्था इतनी अनवर्चनीय है कि कुछ कहा नहीं जा सकता। मैं यहाँ 4–5 बार पहले भी साधना शिविरों में आ चुका हूँ, इसके अतिरिक्त स्वामी विशुद्धानन्द जी की भोजन, आवास आदि सभी प्रकार की व्यवस्था बहुत प्रशंसनीय रहती है, ओम मुनि जी, आत्म मुनि जी, हरीश मुनि जी यज्ञ की व्यवस्था बहुत मन से करते हैं तथा पाचक गण भी बहुत लगन से कार्य करते हैं। इस प्रकार सभी धन्यवाद के पात्र हैं। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री गौतम जी व वेदपाठी सभी नमन के पात्र है। आज मैं जो कुछ भी हूँ वह परमपिता परमेश्वर की कृपा और दीक्षा गुरु श्रद्धेय स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी की प्रेरणा से हूँ। मैं गुरु जी का अत्यन्त आभारी हूँ।

सम्पर्क सूत्र : **9891215194**

योग शिविर का मेरा अनुभव

–गिरधारी लाल आर्य (पूर्व पार्षद नगर निगम अलीगढ़)

इस शरीर का जन्म एक पौराणिक एवं भूत प्रेतों को मानने वाले परिवार में हुआ था, जिसमें आध्यात्मिक क्षेत्र में चलने के लिए केतू (पताका) के रूप में किसी के द्वारा दी गई महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की केवल एक (फोटो) चित्र दीवार पर लगा हुआ था। मेरे पूछने पर भी घर के लोग अज्ञानता के कारण यह नहीं बता पाते थे कि यह किसका चित्र है। लेकिन वह चित्र मुझे आकर्षित करता रहता था मैं उसे टकटकी लगाकर देखता रहता था। ईश्वर की कृपा से मुस्लिम बाहुल क्षेत्र में रहते हुए भी एक सज्जन श्री भगवती प्रसाद जी आर्य से एक दिन सम्पर्क हो गया उनसे धर्म चर्चा हुई तब आर्य समाज और स्वामी दयानन्द सरस्वती के बारे में जानकारी मिली जो मुझे अच्छी लगी और मैं आर्य समाज में आने जाने लगा और वहाँ से विद्वानों से प्रेरणा लेकर दैनिक यज्ञ और संध्या का शाब्दिक उच्चारण चलता रहा जिसमें मेरी पत्नी उमा आर्य का पूर्ण रूपेण योगदान है जो कि आज भी बिना यज्ञ किये कुछ भी नहीं खाती हैं। सामान्य रूप से ऐसा लगभग 20 वर्ष से चल रहा था। एक दिन आर्यवीर दल के कार्यक्रम में ब्रह्मचारी राजसिंह आचार्य के प्रवचन में ईश्वर, जीव, प्रकृति की पहले से सुनी हुई बातों को सुना लेकिन वह प्रवचन हृदय की गहराई को छूने वाला विशेष प्रवचन रहा। यहाँ से मैंने मन ही मन संकल्प कर लिया कि ईश्वर का प्रत्यक्ष करना है। यह यात्रा मेरी उसी दिन से पूर्ण श्रद्धा से निष्ठा से आज भी चल रही है, ईश्वर की सच्ची लगन। मैं फिर विद्वानों की शरण में स्वामी विष्वाक, आचार्य धर्मवीर स्वामी जी, अमृतानन्द जी, आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी आदि के अजमेर और रोजड़ में अनेकों शिविर किए तो अपनी मंजिल का रास्ता ठीक है और यही है ऐसा निश्चय हो गया, लेकिन फिर भी कुछ मन में शंका रहती थी। कहीं न कहीं मुझसे कुछ छूट रहा है जो मुझे रास्ते में बढ़ने नहीं दे रहा। फिर अनुमानिक और शब्द प्रमाण से सिद्ध परमात्मा से प्रार्थना की मुझे अपना रास्ता दिखाओ, दिल में बहुत ईश्वर प्राप्ति की तड़फन थी, अजीब सी बैचेनी थी तब मुझे एक आर्य मुनि ने कहा कि यदि तुम स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी का आषाढ़ के माह में लगने वाले शिविर में चले जाओ वह समाधिस्थ योगी है वहाँ तुम्हे अवश्य रास्ता मिलेगा। अभी शिविर में लगभग दो माह शेष थे लेकिन वह दो माह का प्रत्येक दिन मुझे एक–एक वर्ष से कम नहीं लगता था। आखिरकार वह समय आ ही गया शिविर से दो चार दिन पहले स्वामी जी से फोन पर मैंने शिविर में भाग लेने की अनुमति माँगी तो बड़े मधुर शब्दों में मुझे अनुमति दे दी और मैं देहरादून ट्रेन लेट होने के कारण 9 बजे रात्री को लगभग पहुँचा तो कोई भी वाहन धौलास आश्रम जाने को नहीं मिल रहा था। फिर स्वामी जी को फोन करके बताया तो उन्होंने रात में ही लगभग 11 बजे स्वामी विशुद्धानन्द जी को वैन लेकर मुझे लेने भेज दिया। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि बिना पूर्व परिचय के स्वामी जी की इतनी कृपा और ईश्वर की दया हो रही है, तब तो स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी के प्रति श्रद्धा और गहरी हो गई और और उन्हें एक नजर देखने की अभिलाषा होने लगी लेकिन आश्रम धौलास पहुँचते–पहुँचते काफी रात हो गई थी इस कारण उस दिन स्वामी जी के दर्शन नहीं हो सके। और दूसरे दिन प्रातः 4 बजे स्वामी जी साधना का अभ्यास कराने के लिए हॉल में आये तो उनके चेहरे की प्रसन्नता शरीर से स्फूर्ति और ईश्वर की घनिष्टा साफ–साफ झलक रही थी तो मैं भी सच्चे योग निष्ठ गुरु को प्राप्त करके अपने आपको धन्य समझने लगा और ईश्वर के शीघ्र साक्षात्कार की आशा करते हुए ईश्वर को

धन्यवाद किया। लेकिन कुछ देर बाद हॉल में अनहोनी सी घटना घटने लगी कोई हिल रहा है कोई जोर–जोर से दहाड़ रहा है, कोई रो रहा है, कोई हँस रहा है, कोई–कोई भिन्न–भिन्न मुद्राये कर रहे थे और स्वामी जी उनको निर्देशन भी बीच–बीच कर रहे थे तो मैंने पूछा यह ऐसा क्यों कर रहे हैं तो बताया कि यह प्राण साधना गुरु जी कराते हैं। यह सब पहली बार मैंने देखा और सुना था कि कोई आर्य सन्यासी ऐसा भी ढोंग और पाखण्ड कराते हैं तो स्वामी जी के प्रति जो मेरी श्रद्धा और निष्ठा थी सब तार–तार हो गई। अब मैं वापिस घर जाने के लिए तैयार हो रहा था। तो इस पाखण्ड का पर्दाफाश आर्य समाज के मंचों पर करने के लिए विचार करने लगा तो सोचा कि जब इस पाखण्ड का खण्डन करना है तो पाखण्ड की जड़ तक जाना होगा और यह यहाँ कुछ दिन रूक करके ही संभव है। फिर मैंने वहीं रूककर खूब थकने तक साधकों के साथ कई प्रकार की भत्रिकाऐं की लेकिन मेरे शरीर में कोई क्रिया नहीं हो रही थी तो यह पक्का बैठ गया कि यह पाखण्ड ही है। मैंने गुरु जी से कहा कि यह सब वैदिक साहित्य में तो चर्चित नहीं है और मेरे शरीर में भी घटित नहीं हो रहा तो गुरु जी ने कहा यज्ञ के बाद ऊपर छत पर आना जब में वहाँ गया तो कुछ और भी लोग वहाँ बैठे थे जिनके शरीर मे क्रियाऐ नहीं हो रही थी। गुरु जी ने बारी–बारी से सबके पीठ की तरफ नीचे से ऊपर तक हाथ फेरते हुये पीठ थप–थपाई अर्थात् जैसे कि शक्तिपात किया हो और कहा कि इस क्रिया के प्रति आप लोगों की श्रद्धा नहीं है और सोच भी विपरीत है इसलिए श्रद्धा रखते हुए स्वयं अपने शरीर को थोड़ा–थोड़ा हिलाओ। ऐसा करते–करते अचानक मेरे शरीर में भत्रिका करते–करते आधा घंटा, पौना घंटा हो गया शरीर में कोई थकान भी नहीं और जोर–जोर से भत्रिका करने को मन करने लगा और यह अच्छा लगने लगा फिर तो अन्य क्रियाऐं शरीर में होने लगी। यह सब करते–करते जो मन ईश्वर के ध्यान में नहीं लगता था वह अब इस योग्य होने लगा तो अपने अन्दर जो गुरु जी के प्रति अश्रद्धा हुई थी बुरे विचार आये थे उनके लिए पश्चाताप होने लगा। फिर मैंने सबके सामने गुरु जी से क्षमा माँगी। गुरुजी ने हँसते हुए कहा कोई बात नहीं साधना में लगे रहो। यह प्राण साधना शरीर और मन की शुद्धि के लिए है। जब योग्यता हो आये तो ईश्वर प्रत्यक्ष के लिए तो महर्षि पंतजलि वाला राज योग ही करना होगा और बिना ज्ञान के मुक्ति और ईश्वर प्राप्ति सम्भव नहीं है। इसके लिए मैंने आचार्य सत्यजीत जी से फोन पर सम्पर्क किया कि मैं आपके न्याय दर्शन की कक्षा में भाग लेना चाहता हूँ उन्होंने मेरी शिक्षा को पूँछकर नम्र शब्दों में मेरी प्रार्थना अस्वीकृत कर दी। कुछ काल बाद गुरुजी ने आचार्य सत्यजीत जी को धौलास आकर साँख्य दर्शन पढ़ाने के लिए आमन्त्रित किया वहाँ मुझे साँख्य दर्शन पढ़ने का गुरुजी की कृपा से सौभाग्य प्राप्त हुआ। परीक्षा में लगभग 73 अंक प्राप्त किये तो रूचि देख आचार्य जी ने योग दर्शन, वैशेषिक दर्शन, न्याय दर्शन पढ़ने की अनुमति अजमेर गुरुकुल में आकर पढ़ने की अनुमति प्रदान की। उनकी भी परीक्षा आचार्य जी के सरल ढ़ग से पढ़ाने के कारण लगभग 73–74 प्रतिशत से पास की। लेकिन योग दर्शन का समाधि विषय व्यवहार में कैसे आये यह विचार मन में आता रहता था। मालूम पड़ा कि आचार्य आशीष जी नालापानी वैदिक साधन आश्रम में एक प्रथम स्तर का शिविर लगा रहे है मैंने उसमें भाग लिया तो वह समाधि विषय पूरा खुल गया था उसका अभ्यास घर पर भी करने लगा तब गुरुजी का फोन आया कि 9 फरवरी से 1 मार्च तक शिविर है तपोवन में मैं 9 तारीख की सुबह ऊपर तपोवन आश्रम पहुँच गया यहाँ मैंने पहले भी शिविर किये हैं इस बार यहाँ बहुत परिवर्तन देखा। ऐसा लगा मानो– धरती का स्वर्ग तपोवन आश्रम है।

यहाँ का वातावरण साल के लम्बे–लम्बे सघन वन पूरी तरह शांत और सुगन्धित साधनामय

एवं पारिवारिक तथा औपचारिकता और सांसारिक चहल–पहल से रहित है। यहाँ महात्मा आनन्द स्वामी जैसे अनेक वैदिक सन्यासियों ने साधना की है उनकी यह योग की प्रयोगशाला स्थली रही है जिसको यहाँ के मन्त्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी सहित पदाधिकारियों ने अच्छे रख रखाव को सुव्यवस्थित करके रखा है। यह सब धन्यवाद के पात्र है जिन्होंने स्वर्ग को स्वर्ग बनाये रखा है। इस शिविर में पहली बार ऐसा अनुभव लगभग पूरे दिन जाग्रत अवस्था में मैं शरीर से अलग चेतन आत्मा हूँ ऐसी अनुभूति बनी रहती है और जो योगदर्शन के आधार पर विर्तक सम्प्रज्ञात समाधि की चर्चा है वह वितर्क सम्प्रज्ञात समाधि की स्थिति मन की अधिकांश समय बनी रहती है इस स्थिति के लिए मैं सर्वप्रथम परम पूज्य कृपा निधान परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ फिर आचार्य आशीष जी और आचार्य सत्यजीत, स्वामी विष्वंक जी आदि का धन्यवाद करता हूँ और यहाँ के पदाधिकारियों को भी धन्यवाद और इस सबके आधार बनाने वाले गुरुजी स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी के चरणों में वन्दना करता हूँ दिनॉक 27 की शाम को यज्ञ के वेद–पाठ में ऐसा लग रहा था कि मन्त्र में कर्णेन्द्रिय से नहीं सीधे–सीधे हृदय प्रदेश में मंत्र सुन रहा हूँ।

इस स्थिति को मैं लिखना नहीं चाह रहा था लेकिन गुरुजी का निर्देश था कि अन्य लोगों को प्रेरणा मिलेगी इसलिए लिखकर दे दो यह गुरु जी के आदेश का पालन है। इसलिए पाठक बन्धुओं से निवेदन है कि इस विषय पर मुझसे चर्चा न करें इस विषय को महर्षि पंतजलि, महर्षि व्यास जी ने बहुत विस्तार से और अधिक स्पष्ट लिखा है योग दर्शन में वहाँ देखे और और जो इस स्थिति तक पहुँचे हुए है या आगे अन्य समाधि तक की स्थिति में है। वह तो मेरे प्रेरणा स्त्रोत है उन्हें भी मैं अपनी स्थिति का पूर्ण रूपेण योग दर्शन से अधिक कुछ बताने में समर्थ नहीं हूँ। इसलिए हम सब का प्रेरणा स्त्रोत योग दर्शन ही हैं। हमें ऋषियों में ही अधिक श्रद्धा और विश्वास करना चाहिए।

व्यवस्था– यहाँ शिविर में रहने, सोने, भोजन आदि की बहुत अच्छी व्यवस्था स्वामी जी और मंत्री ई० प्रेम प्रकाश शर्मा जी द्वारा की गई है जो हमारी साधना में सहयोगी रही है यह सभी धन्यवाद के पात्र है। इनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। वैसे तो सभी सहयोगी जब एक दूसरे के पूरक है लेकिन स्वामी विशुद्धानन्द जी को इस शिविर रूपी भवन में नींव रूपी आधार हैं जो अपनी साधना आदि को त्याग करके हमारी व्यवस्था में पूरे समय लगे रहते हैं और उनका त्याग दिखाई भी नहीं देता है ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी साधना को दिन दुगनी रात चौगनी बढ़ाये और गुरुजी के साथ–साथ इनको जल्द से जल्द मोक्ष सुख प्रदान करें। मैं ऐसी प्रार्थना करता हूँ परमेश्वर से।

यज्ञशाला की व्यवस्था– यज्ञशाला की सफाई और यज्ञ हेतु टनों लकड़ी, सामग्री, घी की यथा योग्य व्यवस्था में सेवा कार्य सर्व श्री ओम मुनि जी, हरीश मुनि जी, आत्म मुनि जी आदि का योगदान सराहनीय है। ईश्वर इनकी भी साधना अच्छी बनायें।

वेदपाठ– चतुर्वेदीय परायण यज्ञ में गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारीयों द्वारा मधुर उच्चारण किया गया उसके साथ ब्रह्मचारीयों का सेवा कार्य भोजन परोसने आदि का सराहनीय रहा। परमात्मा इनको भी साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ाये।

विशेष– पहली बार आर्य समाज के किसी बड़े अधिकारी (प्रेम प्रकाश शर्मा जी) को 21 दिन पूरे चतुर्वेद परायण यज्ञ और साधनारत देखे गये जो आर्य समाज के लिए शुभ संकेत है इससे उनमें आर्य समाज के लिए काम करने के लिए और अधिक शक्ति सामर्थ्य प्राप्त हुई होगी।

डॉ० नारायन दास साधक जी ने मुझे (1000) रुपये एक हजार रुपये दक्षिणा में दिये उनको भी धन्यवाद और ईश्वर से उनकी साधना भक्ति बढ़ाने की प्रार्थना करता हूँ। सबका भला हो, सबका कल्याण हो सबकी स्वस्थ मुक्ति हो।

दिनांक 9 फरवरी 2018 से 1 मार्च 2018 तक वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून में चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

—इं0 प्रेम प्रकाश शर्मा

यज के आयोजक— स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी
यज्ञ के ब्रह्मा— आचार्य गौतम जी करनाल (हरियाणा)
वेदपाठी— श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय गौतम नगर — नई दिल्ली के ब्रह्मचारी राजेश, ब्रह्मचारी शैलेन्द्र, ब्रह्मचारी मानस रंजन, ब्रह्मचारी सुमित

दिनांक 9 फरवरी प्रातः 4 बजे से 6.30 बजे तक तथा सांय 6 बजे से 7.30 बजे तक योगासन, प्राणायाम तथा ध्यान की कक्षा से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। ध्यान एवं योगासन आदि श्री रघुनाथ आर्य (अलीगढ़) ने बहुत ही सहज तथा अनुभवी तरीके से कराये। स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी भी प्रत्येक कक्षा में स्वयं उपस्थित रहकर पूर्ण रूपेण सहभागिता करते रहे और यथा आवश्यक निर्देश देते रहे। तत्पश्चात् 7 बजे से 9.30 बजे तक 5 हवनकुंडो में लगभग 50 साधकों ने गायत्री एवं ऋग्वेद के मंत्रों से यज्ञ किया। इसी प्रकार सांय 3 बजे से 5.30 बजे तक पुनः यज्ञ हुआ। 9, 10 व 11 फरवरी को ऋग्वेद के मंत्रों के अतिरिक्त सवा लाख गायत्री मंत्रों से गायत्री यज्ञ हुआ। 11 तारीख सांयकाल 3 बजे से केवल वेदमंत्रों से ही यज्ञ किया गया। साधकों के लिए सुपाच्य, बिना नमक का स्वादिष्ट भोजन तैयार कराया गया। प्रातः सांय दोनों समय दूध दिया गया तथा साथ में अलग—अलग दिन फल अथवा मखाने आदि दिये गये।

आचार्य गौतम जी ने प्रथम तीन दिन गायत्री मंत्र के महत्व, और इसके जपने की विधि तथा उसका हमारे जीवन पर प्रभाव का अत्यन्त विस्तृत रूप से वर्णन किया जिसके परिणाम स्वरूप स्वामी जी ने प्रत्येक साधक को सुझाव दिया कि प्रातः काल 9.30 बजे के बाद मौन रखें और कम से कम 10 माला गायत्री की प्रतिदिन अवश्य करें। आचार्य गौतम जी ने वेदमंत्रों की व्याख्या करते हुए बताया कि ज्ञान वह है जो हमारे स्वयं के अनुभव द्वारा परिपक्व हो अथवा किसी अन्य पर अनुभूत हो जैसे ज्वर होने पर किसी औषधी के प्रयोग से रोग ठीक हो जाता है तो उस औषधी का विस्तृत वर्णन एवं प्रयोग विधि को सही—सही जानना ज्ञान कहलायेगा। ज्ञान प्राप्त करना एक निरन्तर प्रक्रिया है। आचार्य जी ने बताया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं क्योंकि केवल वेद ज्ञान रखने वाला ही संसार के सभी प्राणियों (मानव जाति, पशु—पक्षी, जनचर, वृक्ष, वनस्पति) के कल्याण एवं उत्थान की कामना एवं प्रयास कर सकता है। वेद ही "वसुदेव कुटुम्भकम की घोषणा" करता है वेद से इतर अन्य ग्रन्थ इतनी विस्तृत विचारधारा नहीं रखते। बाइबिल, कुरान आदि सब ग्रन्थ तो यह मानते है कि मनुष्य के भोग के लिये ही जीव—जन्तु पौधे, फल आदि बनाये हैं इसलिए वह पशु—पक्षियों को अपना भोजन बनाने में परहेज नहीं करते।

आचार्य जी ने वेद मंत्रों की व्याख्या करते हुए बताया कि मनुष्य का दो बार जन्म होता है एक बार माता के गर्भ से और दूसरी बार विद्या प्राप्त करने हेतु आचार्य से अर्थात् मनु महाराज के शब्दों में जन्म के समय सभी शुद्र होते हैं अर्थात् किसी भी बच्चे को ज्ञान नहीं होता। जो आचार्य से विद्या ग्रहण करके विद्वान बनते हैं वही द्विज कहलाते हैं। सत्य—विद्या के ग्रहण करने के बाद ही किसी स्त्री—पुरुष को पृथ्वी से लेकर ईश्वर पर्यन्त सभी पदार्थों का सत्य—सत्य ज्ञान होता है। जो व्यक्ति ईश ज्ञान से निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक परमेश्वर की उपासना करते हैं केवल वही योग साधना के मार्ग पर चलते हुए मोक्ष मार्ग के पथिक बनते हैं। जो ईश ज्ञान में महापुरुषों अथवा प्रकृति की पूजा करते हैं उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होता क्योंकि पुरुष कितना भी महान क्यों न हो वह ईश्वर नहीं हो सकता और प्रकृति अर्थात् मूर्ति पूजा से भी कुछ प्राप्त होने वाला नहीं है। वेद

मार्ग ही ईश्वर तक पहुँचने का एक सही व सच्चा मार्ग है जो 'वसुदेव कुटुम्भकम' का आदर्श प्रस्तुत करता है।

आचार्य जी ने बताया कि जैसे कोई भी सारथी सुन्दर घोड़ों को रथ में जोड़कर रथ को अपने लक्ष्य तक पहुँचाता है उसी प्रकार जितेन्द्रिय जीव अपने सम्पूर्ण प्रजोयनों को सिद्ध कर लेता है। चाहे कितना भी बड़ा लक्ष्य हो इसलिए हमें योग द्वारा अपनी इन्द्रियों को नियन्त्रण में करना चाहिए। मंत्र की व्याख्या करते हुए यज्ञ के ब्रह्मा जी ने बताया कि सुख का मार्ग क्या है और दुख का मार्ग क्या है इस वेद वाणी के माध्यम से बता रहे है। कौन हर पल दुखी रहता है। उत्तर है जो सदा मूर्खों का संग करता है वह दुखी रहता है। इसलिए सदा मुर्खों का संग छोड़कर विद्वानों का संग करना चाहिए। सन्यासियों, सत्कर्मियो, योगियों, वेद मार्गियों, गुरुकुलों के साथ संग करना चाहिए। इसी शृंखला को बढ़ाते हुए विद्वान आचार्य जी ने बताया कि मनुष्य का जीवन बहुत महत्वपूर्ण है उसको उत्कृष्ट बनाने के लिए साधन चाहिए लेकिन जीवन के साधनों को ही जीवन समझ लेना मूर्खता है। आज यही हो रहा है यदि बच्चे को नई मॉडल की बाइक न मिले या मन पसन्द ड्रेस न मिले तो वह परेशान हो जाता है और कभी–कभी वह इच्छित वस्तु न मिलने पर अपना जीवन भी नष्ट कर देता है। इसलिए यह जरूरी है कि हम अपना जीवन श्रेष्ठ बनाने के लिए सज्जनों, योगियों से जुड़े और आध्यात्म मार्ग का पथिक बने ताकि हम साधनों में ही फँसकर न रह जाये।

ओ३म् उत स्वया तन्ता 3 सं वेद तत्कदान्वऽत्तर्वरुणे भुवानि।
कि मे हव्यमहृणानो जुषेत कदा भडीकं सुमना अभिख्यम् ।7 ।86 ।2 ।

उपोरक्त वेद मंत्र में वर्णन है कि उपासक के मन में विचार उठते हैं कि मैं परमेश्वर का साक्षात्कार कब कर सकूँगा? क्या मैं परमेश्वर के साथ बोल सकूँगा? मैं कब प्रभु के अन्दर पहुँचूगा? मेरा अर्पण किया हुआ क्या प्रभु स्वीकार करेगा? वास्तविकता यह है कि वह प्रभु हर एक की प्रार्थना स्वीकार करता है यदि भक्त का हृदय निर्मल है। हृदय के निर्मल होने पर प्रभु का साक्षात्कार होता है। इस मंत्र में एक साधक/उपासक के दिल की पुकार है। हे ईश्वर मुझपे ऐसी कृपा करें कि मैं आपके समीप आपसे चर्चा कर करूँ। कुछ प्रार्थना कर सकूँ। तीन शब्द हैं उपासक, उपास्य, उपासना। उपासक अर्थात् साधक, उपास्थ अर्थात् ईश्वर उपासना वह विधि जिसके द्वारा कोई साधक ईश्वर के निकट चला जाता है। जब यह शब्द स्पष्ट हो जाते हैं तो उसे कोई भ्रांति नहीं रहती उसे पता चल जाता है कि उपास्य कौन है और उपासना की सही विधि क्या है। अध्यात्म मार्ग का सही ज्ञान होना चाहिए तभी सही उपासना हो पाती है। तब साधक अपनी उपासना ईश्वर को अर्पित कर पाता है इसके लिए ईश्वर से अत्यधिक प्रीति होनी चाहिए। इसके लिए साधक तर्क–वितर्क के द्वारा चिन्तन करते है कि ईश्वर है, ईश्वर प्राप्तव्य है ईश्वर को जाने बिना मेरा कल्याण होगा ही नहीं। साधक के लिए आत्म निरीक्षण करना प्रति आवश्यक है।

मा भूम निष्टयाइवेन्द्र त्वदरणाइव।
वनानि न प्रजाहितान्यदिवो दुरोषासो अमन्महि ।8 । ।1 ।13 ।

आचार्य जी ने उक्त मंत्र की व्याख्या करते हुए बताया कि हम इन्द्र की कृपा से कभी भी नीच मनुष्यों की तरह व्यवहार न करें तथा कभी भी आनन्द रहित न हो। नीच मनुष्यों की तरह व्यवहार करने वाले लोग सदा आनन्द से रहित ही होते है। इन्द्र प्रभु की कृपा से हम शाखा आदि से रहित टूटे पेड़ की तरह पुत्र–पौत्रादि से रहित भी न हो। हम अपने पुत्र–पौत्रादिकों के साथ उत्तम और विशाल घर में रहते हुए प्रभु की स्तुति किया करें। अर्थात् नीच भावों को त्यागकर ऊँचे भाव ग्रहण करें ताकि ईश्वर का सान्धिय प्राप्त हो। इस मंत्र में यह वर्णन किया गया है कि विद्या तथा विनय से सम्पन्न

पुरुष में सब सद्गुण निवास करते है अर्थात् जो पुरुष परमात्मा की उपासनापूर्वक भक्तिभाव से नम्र होता है उसके शत्रु उस पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते, सब विद्वानों में वह प्रतिष्ठा प्राप्त करता और सभी गुणी जनों में मान को प्राप्त होता है इसलिए सब पुरुषों को उचित है कि नीच भावों को त्यागकर उच्च भावों को ग्रहण करें ताकि परमपिता परमात्मा के निकटवर्ती हो।

ओ३म् पुनानः कलशेष्वा वस्यांव्यरुषो हरिः। परि गव्यान्यव्यक्त ।9 ।8 ।6 ।

मंत्र कहता है कि वह परमात्मा विद्युत के समान वस्त्रों को धारण करता हुआ प्रत्येक वस्तु को अपने भीतर रखकर प्रत्येक ब्रह्माण्ड में आप व्यापक होकर सबको पवित्र कर रहा है और (हरिः) सबके दुखों को हरने वाला प्रत्येक पृथिव्यादि ब्रह्माण्डों को आच्छादन कर रहा है। परमात्मा इस संसार की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय का कारण है। इसलिए उसको हरि रूप से कथन किया है। वह परमात्मा विद्युत के समान गतिशील होकर सबको चमत्कृत करता है, उसी की ज्योति को ज्ञानवृत्ति द्वारा उपलब्ध करके योगी आनन्दित होते हैं। ईश्वर को हरि कहते है क्योंकि वह भक्तों के कष्टों को हरता है। और उसकी ज्योति को ज्ञानवृत्ति से प्राप्त करके साधक धन्य हो जाता है।

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।

अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ।10 ।71 ।2 ।

मंत्र की व्याख्या करते हुए आचार्य जी ने बताया कि जिस प्रकार छलनी से सत्तू को छानकर साफ कर लिया जाता है उसी प्रकार जब धीर गम्भीर विद्वान मन से विचार कर वाणी का प्रयोग करते हैं तब वे इसके मित्रभूत हुए वाणी के शब्दार्थ सम्बन्धों को जानते हैं और इनकी वाणी में कल्याणकारी लक्ष्मी निहित होती है। परमपिता परमात्मा ने हमारे साथ अनेक शक्तियों को प्रदान किया है। हमारा शरीर अयोध्या नगरी है जिससे एक वाणी की शक्ति अद्वितीय है यह वाणी इतनी अद्भुत है कि यदि वह वाणी का ठीक–ठीक प्रयोग करना जानते तो उसे सिद्धियाँ प्राप्त होने लगती हैं। यदि वाणी का सही प्रयोग किया जाये तो किसी के भी दिल में बैठ सकते हैं। कई बार हम मन में उद्वेग आने पर बिना समझे कुछ भी बोल देते है जिसका बहुत नुकसान होता है। कभी–कभी नाम और रूप अर्थात् शब्द और दृश्य चित्त में बैठ जाते हैं और ध्यान की अवस्था में ये प्रकट होते है यदि इन शब्द और दृश्यों को रोक दें तो समाधि लग जाती है। जैसे छननी में छानकर छिलका अलग कर लेते हैं उसी प्रकार शब्दों को तोलकर बोलना चाहिए। वाक शक्ति परायों को अपना बना देती है। इसलिए सबसे प्रीतिपूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

नमस्ते प्रवतो नपाद्यतस्तपः समूहसि। मृडया नस्तनूभ्यो मयस्तोके भ्यास्कृधि।। अथर्ववेद।।1 ।13 ।2 ।

अथर्ववेद का अर्थ है स्थिर रहने वाला। इसे विज्ञान वाला वेद भी कहते है। अथर्ववेद के मंत्रों को समझाते हुए आचार्य जी ने बातया कि इस वेद में वर्णित है कि हमारे अन्दर स्थिरता कैसे आये और हमारा जीवन सुखी कैसे बने। ईश्वर को प्रजापति भी कहा गया है प्रजापति की दो संताने है एक दैव दूसरे असुर। जो ईश्वर के भक्त है उन्हें सुख मिलता है और जो असुर हैं उन्हें दुख मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति सुख चाहता है। सुख व्यक्ति के स्वयं के हाथ में हैं धर्म युक्त कार्य के माध्यम से सुख आपके हाथ है। "धर्मात् सुखम्– अधर्मात दुखम्" ऐसा ऋषियों ने कहा इसलिए धर्म से युक्त कर्म करें।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संभनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वांचवदतु शान्तिवान् ।3 ।30 ।2 ।
मा भ्राता भ्रातरं हिक्षन्मा स्वसारमुत स्वया।
समय×चः सव्रता भूत्वा वाधं वदत भद्रया ।3 ।30 ।3 ।

आचार्य जी ने मंत्रों की व्याख्या करते हुए

बताया कि पुत्र पिता के अनुकूल कर्म करें और माता के साथ मन के शुभ भाव से व्यवहार करें। पत्नी पति के साथ सदा मधुर भाषण करती रहे। भाई–भाई से द्वेष न करें, बहिन–बहिन के साथ न लड़े। एक मत से एक कर्म करने वाले होकर परस्पर निष्कपटता से भाषण करें। सब वेदानुकूल सत्य का व्यवहार करें सब मिलकर एक–दूसरे की उन्नति करें। जहाँ कुछ व्यक्ति धनी हो और अधिकतर गरीब हो तो वह गरीब व्यक्ति अमीर के विरोधी हो जाते हैं। समाज में विषमता पैदा हो जाती है आर्य समाज के नियम में लिखा कि प्रत्येक को अपनी उन्नति में संतुष्ट न होना चाहिए बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। असत्य के आधार पर ऐका नहीं हो सकता। सामाजिक विषम व्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। माता–पिता बच्चों के हितकारी बने। पति–पत्नी मित्र भाव से व्यवहार करें। भाई–भाई, बहिन–बहिन, सभी रिश्तेदार वैदिक मार्ग पर चलकर अपने सम्बन्ध मधुर रखें।

शतेन पाशैरभि धेहि वरुणैनं भा ते भोच्चनृतवाड़ः नृचक्षः आस्तां जाल्म उदरं श्रंसयित्वा कोशइवाबन्धः परिकृत्यमानः |4 |16 |7 |

यः समास्यो 3 वरुणो यो व्याम्यो 3 यः संदेश्यो 3 वरुणो। यो विदेश्यऽः यो दैवो वरुणो यश्च मानुषः |4 |16 |8 |

तैस्त्वा सर्वैरमिव्यामि पाशैरसावा मुष्यायणामुष्याः। पुत्र तानु ते सर्वाननुसंदिशामि |4 |16 |9 |

मंत्र में बताया गया है कि हे प्रभो! तू दुष्ट को सैकड़ों पाशों से बाँध देता है, असत्यवादी तेरे पाशों से नहीं छूट सकता। जो दुष्ट मनुष्य अपने पेट के लिए दूसरों को सताता है तू उसके पेट का नाश करता हुआ अन्त में उसका भी नाश करता है। मंत्र संख्या–8 में वर्णन है कि सबके साथ समान भाव रखने वाला, सब देश में समान रीति से रहने वाला एक दिव्य वरुण देव अर्थात् परमेश्वर है इसी प्रकार विषम भाव रखने वाला और छोटे–छोटे स्थानों में रहने वाला एक मानुष वरुण अर्थात् मनुष्यों में रहने वाला जीवात्मा भी है। प्रश्न उठता है कि वरूण के पाशों (बन्धनों) में कौन फँसता है। उत्तर है जिसको पाश का बोध न हो वह अवश्य ही इन पाशों (जालों) में फँसते है। जो व्यक्ति अवृत (असत्य) का सहारा लेता वह ईश्वर के पाशें में फँस जाता है। सत्य का प्रयोग करने पर मुक्ति मिलती है। ईश्वर आदेश देता है कि हे अमुक माता–पिता के सुपुत्र! तू उत्तम रीति से सत्य व्यवहार कर अन्यथा उस प्रभु के पाशों से तू बाँधा जायेगा जिन पाशों का वर्णन यहाँ किया जा चुका है।

विद्वान आचार्य ने अथर्ववेद के समापन सत्र में समझाया कि मनुष्य निषिद्ध कर्मो से पापी होकर दुख और निहित कर्मो के करने से सुकर्मो होकर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख पाते हैं। भगवान ने हमें बुद्धि दी है, ज्ञान दिया है इसलिए जीव को पुरुषार्थ करना चाहिए तभी ईश्वर हमारे ऊपर कृपा करते है। छोटी–छोटी चीजे हमें जकड़े रहती हैं हम उन्हें छोड़ नहीं सकते, यही दुख का कारण है। जब मनुष्य दुखी होता है तो उसका समाधान वेद में मिलता है।

हमने 21 दिन तक स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी के मार्गदर्शन में योगा सूत्र प्राणायाम तथा ध्यान का प्रातः सांय अभ्यास किया तथा आचार्य गौतम जी के पांडित्यपूर्ण व्याख्याओं को हृदयंग करने का प्रयास किया। सभी साधकों ने मर्यादाओं का पालन करते हुए योग शिविर का पूर्ण आनन्द प्राप्त किया। हम सभी साधक गण और वैदिक साधन आश्रम के सभी सदस्यगण स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, स्वामी विशुद्धानन्द जी, आचार्य गौतम जी तथा गुरुकुल गौतम नगर के सभी ब्रह्ममचारियों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते है। श्री ओम मुनि जी, श्री आत्म मुनि जी, श्री हरीश जी, श्री जय प्रकाश जी, श्री सतवीर जी, श्री जगमोहन जी तथा श्रीमती ऊषा जी के हम आभारी है जिन्होंने यज्ञ व्यवस्था, भोजन व्यवस्था तथा आवास आदि की व्यवस्था में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

मेरे योग गुरू स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

— ए.एस.वर्मा

परम पिता परमेश्वर की असीम कृपा तथा मेरे परम हितैषी पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के स्नेह तथा प्रेम के कारण मुझे उनके द्वारा आयोजित योग साधना शिविरों तथा यज्ञों में भाग लेने तथा उनसे लाभा उठाने का अवसर मिलता रहता है। जनवरी 2018 के दूसरे सप्ताह में पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने मुझे फोन पर सूचना दी कि "9 फरवरी से 1 मार्च 2018 तक ऊपर वाले तपोवन आश्रम में चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ तथा योग साधना शिविर होगा, उसमें आपको आना है।" गृह कार्यों में अति व्यवस्था के कारण मैं 16 फरवरी को प्रातः 6 बजे प्रिय पुनीत पायलट स्वामी नित्यानंद जी और साध्वी योगानंद जी के साथ नोयडा से चलकर 12 बजे ऊपर तपोवन आश्रम देहरादून में पहुँच गया।

आश्रम की छटा बहुत निराली है। साल के विशाल वृक्षों के झुडों से प्राकृतिक सौन्दर्य से सम्पन्न, प्रकृति की गोद में बसा नगरों के प्रदूषण से मुक्त यह आश्रम एक अत्यन्त शांत तपस्थली है। इस पावन व शांत तपस्थली में पूज्य स्वामी प्रभु आश्रित जी महाराज, पूज्य आनन्द स्वामी जी एवं दयानंद जी वानप्रस्थी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी तथा स्वामी चित्तेश्वरानंद सरस्वती जी ने उस समय तप किया जब इस स्थान पर साल के वृक्षों के वन के बीच एक कुटिया ही एकांत में थी। न पानी की व्यवस्था और न ही बिजली की। मार्ग भी चढ़ाई वाला उबड़ खाबड़ था। यह मात्र एक जंगल था परन्तु आज आश्रम एक पवित्र, शांत, भव्य यज्ञशाला, साधना कुटीरों, भोजनालय तथा एक बड़े विशाल साधना तथा विश्राम वृहत्त कक्ष वाला नगर के कोलाहल और प्रदूषण से मुक्त तप स्थल बन गया है।

पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानंद जी सन् 1984 से साधना के लिए (जब वे दिल्ली में श्री चरत सिंह वर्मा इंजीनियर थे) यहाँ एंकाकी बनी साधना कुटिया में आने लगे थे और साधना करते थे। फिर वानप्रस्थी के रूप में इस पवित्र शांत, एंकाकी स्थली पर उन्होंने कई बार अदर्शन मौन रहकर कठिन तप किया। तब यहाँ न पानी की व्यवस्था थी और न बिजली थी। सब खुला जंगल था। साल के वृक्ष झाड़—झंखाड थे। वर्ष 2006 में मंझावली गुरुकुल में पाँच महीने के विशाल चतुर्वेद ब्रह्म पारायण एवं सवा करोड़ गायत्री महायज्ञ के बाद उनको ईश्वरी प्रेरणा हुई कि इस तपस्थली की भूमि की रक्षा के लिए आश्रम की भूमि की चार दीवारी बनाई जाए। उसके लिए पानी की, निर्माण सामग्री, ईंट, सीमेन्ट, लोहा आदि की व्यवस्था पहले करने आवश्यक थी। मिस्त्री, राज मजदूर दिल्ली से स्वामी जी के पुत्र शशिकांत ने भेजे। ट्रैक्टर, ट्राली पानी की बड़ी—बड़ी टंकियाँ व नौकर स्वामी जी के बड़े पुत्र श्रीकांत वर्मा ने भेजे। जून—जुलाई 2006 में दीवारों की चिनाई का काम आरम्भ कर दिया। यहाँ चिनाई देखकर वन विभाग के अधिकारियों ने बाधा डाली। जिस समय दीवारों की चिनाई चल रही थी, तब जुलाई 2006 का महीना था। प्रायः प्रत्येक दिन भारी वर्षा होती थी। मैं भी उस समय यहाँ उपस्थित था। स्वामी जी ने किस प्रकार सब बाधाओं का सामना किया और उन सबको पार करते हुए। भारी वर्षा में छाता लिए स्वयं खड़े होकर दीवार की चिनाई कराते थे मैं उसका प्रत्यक्षदर्शी था।

इस समय यह तपस्थली बहुत ही उत्तम,

पवित्र, शांत, नगर के कोलाहल व प्रदूषण से मुक्त साधना व यज्ञ के लिए एक आदर्श तपस्थली हो गई है। यहाँ गत वर्ष एक विशाल यज्ञशाला जिसमें पांच वेदियाँ है, एक बड़ा हॉल, पुरानी यज्ञशाला के स्थान पर कई कमरे, कुटियाँ का तथा अन्य निर्माण कार्य किए गए। यह सब देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है। तपोवन आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी एक बहुत ही लगनशील, धर्मनिष्ठ, साधक तथा निष्ठावान दूरदर्शी व्यक्ति हैं।

योग साधना शिविर इस महायज्ञ के प्रेरणा स्त्रोत, मार्ग दर्शन, योगी, तपस्वी, सन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानंद सरस्वती जी ने कठिन साधना, त्याग एवं तप किया है। गृहस्थ व इंजीनियर के पद पर रहते हुए उन्होंने साधना के साथ–साथ कई बार चतुर्वेद पारायण यज्ञ किए थे और कई प्रकार के व्रत व उपवास तथा मौन रखकर साधना पथ पर अग्रसर हो गए थे। स्वामी जी ने मई 2005 में सन्यास लिया और स्वामी चित्तेश्वरानंद सरस्वती के रूप में गुरुकुल मंझावली में सितम्बर 2005 से मार्च 2006 तक पहला पांच महीने वाला विशाल महायज्ञ तथा 2015–16 में पुनः सवा करोड़ गायत्री का तथा चारों वेदों का महायज्ञ किया। इस तपस्थली पर भी कठोर सर्दी के महीनों दिसम्बर, जनवरी में 40–40 दिन तक वह योग साधना शिविर चलता रहा। अब उनका लक्ष्य समाज के योग व यज्ञ का प्रचार व प्रसार करना है। वे मंचों से प्रायः यज्ञ की महिमा और लाभ समझाते हैं और लोगों को प्रतिदिन यज्ञ करने के लिए प्रेरित करते है। कई लोगों ने उनसे वानप्रस्थ व सन्यास की दीक्षा ली है। वे आग्रह करते है कि स्वस्थ रहने के लिए आसन, प्राणायाम तथा प्रदूषण को दूर रहने के लिए यज्ञ अवश्य करें तथा ईश्वर की भक्ति व उपासना के लिए ध्यान करें।

पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानंद जी बहुत ही विनम्र, सहनशील, शांत, ईश्वर भक्त, एक आदर्श तथा सच्चे, त्यागी, सन्यासी हैं। वे प्रत्येक शिविर में साधको को ईश्वर की भक्ति, ज्ञान प्राप्ति में प्रगति के साथ–साथ जीवन में उत्तम आचार व्यवहार की बाते भी समझाते हैं। वे चाहते हैं कि उनके सभी साधक स्वस्थ रहें तथा अच्छे व्यक्ति श्रेष्ठ वानप्रस्थी व सन्यासी बनें। उनके योग साधना शिविरों में आए कई पुरुषों तथा महिलाओं ने स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया है। वे स्वस्थ हो गए और उनके रोग दूर हो गए।

स्वामी जी महर्षि पतंजलि के सूत्र–

"योगचित्त वृत्ति निरोधः" को चरितार्थ करने के लिए साधकों को यज्ञ के समय भी अपने चित्त को वेदपाठियों द्वारा बोले जा रहे वेद मंत्रों पर ध्यान केन्द्रित करके आहुति देने के लिए प्रेरित करते रहते है। साधना में ध्यान लगवाते समय आत्मा व शरीर को अलग–अलग समझते हुए मन को आत्मस्थ करने के लिए प्रेरित करते हैं। हर समय ईश्वर हमारे साथ है। ईश्वर प्रणिधान के लिए समझाते है। उनका प्रयास यज्ञ को योग से जोड़ने पर रहता है। साधक एकाग्र चित्त करके यज्ञ में अनुभूति प्राप्त करें इस बात का प्रयास करने को कहते रहते है।

मुझे विभिन्न शिविरों में भाग लेने से बहुत लाभ हुआ। सितम्बर 2005 से मार्च 2006 व 2015–2016 तक मंझावली गुरुकुल में पांच महिने तक चले सवा करोड़ गायत्री तथा चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञों में पांच महीने तक उपस्थित रहने से स्वास्थ्य में बहुत लाभ हुआ। मैं प्रतिदिन प्रातः सांय आसन, प्राणायाम तथा कुछ देर ध्यान करने लगा। मैं पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी तथा स्वामी विशुद्धानन्द जी एडवोकेट देशराज चौधरी तथा आचार्य गौतम जी एवं यज्ञ की व्यवस्था में लगे सभी भाई–बहनों का हृदय से धन्यवाद करता हूँ। ईश्वर सभी को दीर्घायु करें।

संसार की हर वस्तु को ईश्वर की वस्तु समझेः स्वामी चित्तेश्वरानन्द

— मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून में 21 दिवसीय चतुर्वेद ब्रह्म पारायण यज्ञ एवं योग–साधना शिविर का एक विशेष आयोजन 9 फरवरी, 2018 को आरम्भ किया गया जो 1 मार्च, 2017 को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में 50 से अधिक साधक–साधिकाओं ने भाग लिया। दिल्ली, पंजाब व हरियाणा सहित अनेक स्थानों से साधक व साधिकायें इस आत्म–कल्याण यज्ञ में भाग लेने हेतु पधारे थे। इस यज्ञ में उन्हीं साधक–साधिकाओं को सम्मिलित किया गया जो 9 फरवरी, 2018 को यज्ञ आरम्भ होने से पूर्व आश्रम में पधार चुके थे। यह साधना शिविर आवासीय था तथा इसमें 9 फरवरी, 2018 के बाद किसी भी नये साधक व साधिका को सम्मिलित नहीं किया गया। इस शिविर में साधको का जीवन काफी व्यस्त रहा। प्रातः 3 बजे जागना होता था, 4 बजे से 7 बजे तक योग साधना, आसन, प्राणायाम एवं ध्यानादि कराया जाता था। चतर्वेद पारायण यज्ञ प्रातः 7.30 बजे से 9.30 बजे तक 2 घंटे चलता था। इसके बाद आधा घंटा प्रातराश के लिए निर्धारित था जिसके बाद 1 घंटे का समय सेवा कार्य में व्यतीत किया जाता था। 11.00 बजे से 1.00 बजे के मध्य भोजन एवं विश्राम करते थे। 1.00 बजे से 3.00 बजे तक वेदों का स्वाध्याय व वेदों का पठन पाठन किया जाता था। अपरान्ह 3.30 बजे से दो घंटे यज्ञ चलता था। 6.00 बजे से 8.00 बजे तक साधना कराई जाती थी। रात्रि 9.00 बजे भोजन करते थे और उसके बाद शयन करते थे। इस व्यस्त दिनचर्या में सभी साधक व साधिकाओं को ढाला गया था। स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी व यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य गौतम जी, (करनाल) भी इन सभी आयोजनों में भाग लेते थे। वैदिक साधन आश्रम तपोवन के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा ने भी

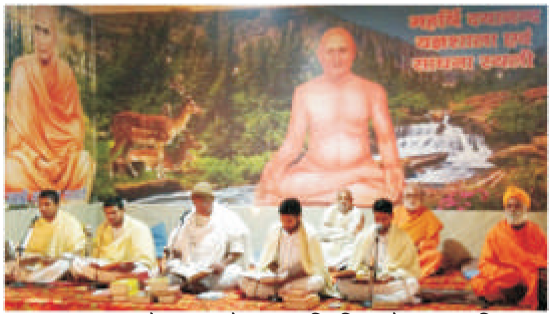

एक साधक के रूप में इस शिविर में भाग लिया। ईश्वर की कृपा से 1 मार्च, 2018 को यह शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। समापन ऋषि लंगर से हुआ। आज समापन दिवस पर यज्ञ की पूर्णाहुति में साधक–साधिकाओं सहित नगर के कुछ ऋषिभक्त भी सम्मिलित हुए।

बृहस्पतिवार 1 मार्च, 2018 को साधकों की यज्ञ से पूर्व की दिनचर्या सम्पन्न हुई। प्रातः 7.30 बजे यज्ञ आरम्भ हुआ और प्रातः 9.30 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। आज पूर्णिमा व होली का पर्व होने के कारण होली के मन्त्रों व पर्व की आहुतियां भी दी गईं। यज्ञ में किसी सूक्त के समाप्त होने पर आचार्य गौतम जी यज्ञ में आये मन्त्रों की व्याख्या करते थे। यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न होने पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य गौतम जी ने यज्ञ को निर्विघ्न सम्पन्न करने में सहायता करने के लिए ईश्वर को धन्यवाद किया। साधक साधिकाओं को सम्बोधित कर ब्रह्माजी ने कहा कि आपने दूर दूर से यहां आकर साधना की और अध्यात्म मार्ग में आगे बढ़े हैं। आचार्य जी ने ''ओ३म् नमः ओ३म् नमः ओ३म् नमः ओ३म् ओ३म्, तेरी दया तेरी कृपा ओ३म् नमः ओ३म् ओ३म'' बोल कर जप भी कराया। आचार्य जी ने सामूहिक प्रार्थना करते हुए ईश्वर से विनम्र अनुरोध किया कि मैं हर वर्ष चारों वेदों के मन्त्रों से यज्ञ करता रहूं। साधना शिविरों में आता रहूं और

ईश्वर की भक्ति करता रहूं। आचार्य जी ने कहा कि होली का पर्व हमें प्रेरणा करता है कि हम इस दिन अपने जीवन की सभी बुराईयों का दहन कर दें।

स्चामी चित्तेश्वरानन्द जी ने यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात सामूहिक प्रार्थना सम्पन्न कराई और उसके बाद अपना प्रेरणादायक उद्बोधन दिया। हम उनके द्वारा कराई गई सामूहिक प्रार्थना और उद्बोधन को प्रस्तुत कर रहे हैं। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, आचार्य गौतम जी, स्वामी वेदानन्द सरस्वती, (उत्तरकाशी) ठाकुर विक्रम सिंह जी, डा. आचार्या अन्नपूर्णा आदि के उपदेश भी हुए जिन्हें हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती द्वारा कराई गई सामूहिक प्रार्थना

चतुर्वेद ब्रह्म पारायाण यज्ञ के प्रणेता स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती ने सामूहिक प्रार्थना कराते हुए कहा कि ईश्वर के दिये हुए साधनों से हमने यह यज्ञ सम्पन्न किया है। यह यज्ञ ईश्वर के अर्पण है। हम संसार की हर वस्तु को ईश्वर की वस्तु समझे। ईश्वर हमें उदार बनायें। ईश्वर जीवन भर हमारी सुख व आवश्यकता की सामग्री हमें देते आ रहे हैं। ईश्वर ने कृपा करके हमारे लिए यह ब्रह्माण्ड बनाया है। वह हमें इस पृथिवी पर सभी पदार्थ प्रदान कर रहे हैं। आपकी बनाई हुई व हमें दी हुई एक–एक वस्तु महत्वपूर्ण है। आपने वायु, अन्न व जल आदि पदार्थ बनाकर हमें प्रदान किये हैं। हे प्रभु! आपकी हम पर महान दया है। आपकी कृपा से हमें ऋषियों के देश इस आर्यावर्त में जन्म मिला है। आपने हमें मनुष्य योनि दी है। विद्वान गुरुओं ने हमें शिक्षा दी है। हमारे सुख के लिए ही आपने इस संसार को बनाया है। इसके लिए हम पुनः पुनः आपका वन्दन करते हैं। हमारा यह चतुर्वेद पारायण यज्ञ सबके लिए कल्याणकारी हो। हम सबके लिए मंगलकामना करते हैं। हम सब परस्पर परस्पर मिलजुल कर रहें। हमारे राष्ट्र की उन्नति हो। हमारे देश की सीमायें सुरक्षित रहें। हमारे शिक्षण संस्थान उन्नत हों। देश भर में सर्वत्र ब्रह्म विद्या का प्रचार व प्रसार हो। हम अपने जीवन से बुरे विचारों को हटायें। यम व नियम का हम पालन करें। देश के सभी लोग सुखी व समृद्ध हों। सबके मनों में आपके प्रति भक्ति के भाव हों। हमारी सन्तानें सुयोग्य हों। वैदिक धर्म सर्वत्र प्रवृत्त हो जाये, यह हमारी कामना है। ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति।

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी का उद्बोधन

मैं आत्मा हूं। मेरी आत्मा मेरे शरीर से भिन्न है। आत्मा अजर और अमर है। हमारा अस्तित्व सदा सदा से है। आत्मा स्वजा है। इसे किसी ने उत्पन्न नहीं किया। ईश्वर ने भी आत्मा को नहीं बनाया है। अभी हम अपने शरीर में हैं। हर बार हमें मरने पर ईश्वर के द्वारा जन्म मिलता है। हर जन्म में हमें माता, पिता, भाई व बहिन मिलते हैं। हमें जन्म मरण से मुक्ति भी मिलती है। हमारे इस सृष्टि व इसके पूर्व की सृष्टियों में अनन्त बार जन्म हो चुके हैं। स्वामी जी ने कहा कि सब माता–पिता सच्चे होते हैं। हम अपने अपने शरीरों में बैठे हैं। हमें हमारा शरीर देने वाली हमारी मातायें है। अपने बच्चों को अच्छे संस्कारों वाला बनाने का कर्तव्य माता व पिता का है। हमें भी अपने जीवन को अच्छा बनाना है। स्वामी जी ने कहा कि आत्मा साधक है तथा परमात्मा साध्य है। मनुष्य योनि ही एकमात्र ऐसी योनि है जिसमें हम परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। मनुष्य योनि उभय योनि है। इस उभय योनि में हम कर्म भी करते हैं तथा पूर्वजन्म व इस जन्म के कुछ कर्मों का फल भी भोगते हैं। हमारे अब तक कितने जन्म हो चुके हैं, कोई भी व्यक्ति उन्हें गिन नहीं सकता। सभी प्राणियों में एक जैसी आत्मा ही होती है। स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने कहा कि आप विचार किया करें कि क्या आप सदा इस शरीर में रहेंगे। हम व आप इस शरीर में सदा नहीं रहेंगे। कुछ समय बाद हम सबकी मृत्यु अवश्य होगी। किसी प्राणी का भी

शरीर सदा नहीं रहता। हमारे संबंधी भी सदा नहीं रहेंगे। सभी कुछ समय बाद मृत्यु को प्राप्त होंगे।

स्वामी जी ने कहा कि संसार में अग्नि, वायु, जल, अन्न, फल, कपड़े आदि जितने भी पदार्थ हैं वह सभी शरीर के लिए हैं। हमारी आत्माओं के लिए बाजार में कुछ भी नहीं मिलता। हमारा शरीर साधन है। यह शरीर हमें ईश्वर भी प्राप्त करा सकता है। इसी शरीर से मनुष्य अपने शुभ व अशुभ कर्मों के भोग भी भोगता है। जब संसार की प्रलय होती है तो यह संसार अपने कारण मूल प्रकृति में विलीन हो जाता है। प्रलय होने पर भी आत्मा अपने मूल स्वरूप में विद्यमान रहता है। स्वामी जी ने बताया कि हम परमात्मा को जानकर ही दुःखों से छूट सकते हैं। परमात्मा को जानने से ही शाश्वत सुख व शान्ति मिलती है। हमारे सबसे निकट परमात्मा ही है। वह कभी हमसे अलग नहीं होता। ईश्वर सदा हमारे साथ रहने से वह हमारा अपना है। स्वामी जी ने कहा यदि हमने अपने इस जीवन में अपने कर्तव्यों का पालन नहीं किया तो हमें यह सुअवसर शायद फिर नहीं मिलेगा। स्वामी जी ने आगे कहा कि हम परिवार से बंधे हैं, परिवार ने हमें नहीं बांधा है। परमात्मा हमसे सदा से जुड़ा है। हमें भी परमात्मा से जुड़ना है। इन्हीं शब्दों के साथ स्वामी जी का उद्बोधन समाप्त हुआ। इसके बाद स्वामी जी ने कुछ सूचनायें दीं और अपने आगामी तीन कार्यक्रमों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आगामी 19 से 25 मार्च, 2018 तक नौएडा में श्री देवमुनि जी के निवास पर वृहद यज्ञ का आयोजन होगा। इसके बाद 25 मार्च से 1 अप्रैल, 2018 तक गुरुकुल मंझावली–हरयाणा में ऋग्वेद से पारायण यज्ञ होगा। तीसरा आयोजन स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी के दिल्ली के निकटवर्ती गांव में जो स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी का जन्म स्थान है वहां 1 अप्रैल से 7 अप्रैल, 2018 तक होगा। उन्होंने सभी श्रोताओं व याजकों को इन आयोजनों में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी का उद्बोधन

गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के संचालन सहित देश के अनेक राज्यों में आठ गुरुकुलों के संस्थापक एवं संचालक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपने उपदेश में उपनिषद में वर्णित ऋषि याज्ञवल्क्य एवं उनकी पत्नी मैत्रेयी और कामायनी की कथा को प्रस्तुत किया। स्वामी जी ने कहा कि ऋषि याज्ञवल्क्य सोचते रहते थे कि वह तपोवन में जाकर वहां आध्यात्मिक विषयों पर विचार करें। उन्होंने अपनी भौतिक सम्पत्ति अपनी पत्नियों को देने का विचार किया। मैत्रेयी ने सम्पत्ति लेकर घर पर रहना स्वीकार नहीं किया और ऋषि के साथ तपोवन जाकर स्वयं भी आध्यात्मिक विषयों पर विचार करने का अपना निश्चय उन्हें बताया। स्वामी जी ने कहा कि पत्नी पत्नी होने के कारण पति को प्रिय नहीं होती अपितु पति को उससे जो सुख सुविधायें मिलती हैं, उस कारण पत्नी पति को प्रिय होती है। इसी प्रकार पत्नी को भी पति अपने स्वार्थ रक्षा व सुख आदि के कारण प्रिय होता है। पुत्र भी माता पिता को तभी प्रिय होता है कि जब तक की वह उनके अनुकूल रहे। यदि पुत्र माता–पिता की भावनाओं के विरुद्ध आचरण करता है तो उनके सम्बन्ध मधुर व स्थिर नहीं रहते। यही स्थिति अन्य सभी सम्बन्धों पर भी लागू होती है।

स्वामी जी ने कहा कि बुरे व्यक्ति को कोई भी पसन्द नहीं करता है। स्वामी जी ने कहा कि धन भी हमें तभी तक प्रिय होता है कि जब तक उससे हमारे प्रयोजन सिद्ध होते हैं। उन्होंने कहा कि अपनी आत्मा की आवाज को सुनों। आत्मा को पहचानों यही हम सबके लिए उत्तम है। स्वामी जी ने कहा कि आप सृष्टि के आरम्भ से बार बार जन्म लेकर यज्ञ करते चले आ रहे हैं। वेदों के उच्च कोटि के विद्वान स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने कहा कि वेद मंत्रों के जप व चिन्तन मनन से आपका अहंकार दूर होता है। उन्होंने बताया कि मनुष्य को अपने प्रयोजन को पूरा करने के लिए उसके अनुरूप पुरुषार्थ करना चाहिये। स्वामी जी ने समझाया कि मनुष्य को ईश्वर के प्रति आस्थावान व श्रद्धावान होना चाहिये। जो व्यक्ति

विवेकपूर्वक वेदों का अध्ययन कर उनके अनुरूप आचरण करता है, उसकी आत्मा जन्म व मरण के बन्धन से मुक्त हो जाती है। स्वामी जी ने यह भी कहा कि जब आप एकान्त में पूर्ण एकाग्रता व समर्पण से आध्यात्मिक यज्ञ करेंगे तो आपका कल्याण होगा।

आचार्य गौतम जी, करनाल का उपदेश

आचार्य गौतम जी ने कहा कि अध्यात्म का पथ मधु से भरा हुआ है। मधु मनुष्य को तृप्ति देता है। साधको को उन्होंने कहा कि आपने यहां यज्ञ में भाग लेकर साहस का परिचय दिया है। आपका साहस प्रशंसनीय है। यहां साधना व यज्ञ करते हुए 21 दिन कैसे बीत गये, पता ही नहीं चला। उन्होंने कहा कि यदि आप इन बीते दिनों को याद करेंगे तो आपको यहां अपने 21 दिनों में किया गया पुरुषार्थ प्रत्यक्ष हो जायेगा। आचार्य जी ने कहा कि यहां आपने अपने हृदय को आनन्द से भरा है। आपने स्वयं को परमात्मा की प्रीति से भरा है। यज्ञ के माध्यम से आपने यहां रहकर स्वयं को ईश्वर से जोड़ दिया है। यज्ञ के बाद भी आप जप के द्वारा ईश्वर से जुड़ते थे। आचार्य जी ने कहा कि आपने यहां जो 21 दिन व्यतीत किये हैं वह आपके जीवन का स्वर्णिम युग है। इन यादों को समेट कर रखना। इससे आपको आनन्द मिलेगा। कोई भी दुःख आपमें प्रवेश नहीं करेगा।

इसके बाद आचार्य जी ने 'ओ३म् तव शरणं ओ३म् तव शरणं' बोलकर कुछ देर तक कीर्तन कराया। आचार्य जी ने कहा कि अपना जीवन ऐसी पद्धति से जीयें जिससे पूर्णता का अहसास हो जाये। आधा अधूरा जीवन जीना ठीक नहीं है। जीवन जीने का कौन सा मार्ग है? इस प्रश्न को उठाकर आचार्य जी ने उत्तर दिया कि ऋषि उत्तर देते हैं कि केवल अध्यात्म का मार्ग है जिस पर चलकर पूर्णता को प्राप्त करते हैं। जीवन में यदि एकाग्रता व समग्रता हो तो जीवन जीने का आनन्द आता है। इससे इतर जीवन खण्डित जीवन होता है। मनुष्य खण्डित जीवन जीकर सुख चाहता है तो उसे सुख कैसे मिल सकता है? इसके लिए तो पूर्णता का ही जीवन जीना होगा। पूर्णता का जीवन केवल अध्यात्मिक जीवन जीने से आता है। आध्यात्मिक जीवन जीने से जीवन में एकाग्रता व समग्रता आती है। हम यदि एक तत्व ईश्वर में ही विचरण करेंगे तो एकाग्रता होगी। हमारे मन में एक विषय केवल ईश्वर का ही होना चाहिये। इससे आपको पूर्णता मिलेगी। जीवन जीने का आनन्द आयेगा। आचार्य जी ने कहा कि ईश्वर उसे छोड़ देता जो ईश्वर को छोड़ देता है। ईश्वर को छोड़ देने से मनुष्य नरक के गर्त में (अर्थात दुखों) गिरता है। आचार्य जी ने कहा कि ईश्वर की कृपा से साधना शिविर और चतुर्वेद पारायण यज्ञ पूर्ण हो पाया है। आपने यहां 21 दिनों तक रहकर साधना की है इसके लिए आप सब बधाई के पात्र हैं।

स्वामी वेदानन्द सरस्वती, उत्तरकाशी का उद्‌बोधन

उत्तरकाशी के स्वामी वेदानन्द जी ने अपने प्रवचन में कहा कि मनुष्य गुरुचरणों में बैठकर सीखता है। जिज्ञासु प्रवृत्ति का व्यक्ति प्रकृति को देखकर भी सीखता है। उन्होंने कहा कि परमात्मा ने मनुष्य का सिर शरीर में सबसे ऊपर बनाया है। उन्होंने कहा कि जब मनुष्य का जन्म होता है तो गर्भस्थ शिशु का माता के गर्भ से सिर पहले बाहर आता है तथा शेष शरीर बाद में आता है। गाय के बच्चे के जन्म के समय पैर पहले आते हैं और शेष भाग बाद में। स्वामी जी ने कहा कि इस घटना से प्रकृति यह सन्देश देती है कि मनुष्य का सिर प्रधान है और गाय आदि पशुओं के पैर। मेधा व बुद्धि की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि मेधावान व्यक्ति किसी विद्वान के दो शब्दों को सुनकर उसका आशय समझ लेते हैं। उन्होंने कहा कि मूर्खता के काम करने वालों के पास भी बुद्धि है परन्तु मेधा नहीं है। स्वामी जी ने न्यायदर्शन और उसके हेय, हेतु, हान और हानोपाय विषयों की चर्चा की और कहा कि हमारे जीवन में होने वाले दुःखों को 'हेय' कहते हैं। इन दुःखों का कारण अज्ञान होता है जिसे 'हेतु' कहा जाता है। 'हान' अपने स्वरूप को जानना है। स्वामी जी ने बताया

कि वह अपने आश्रम में रहकर दिन के 10–10 घंटों तक वेद पढ़ते हैं। उन्हें वहां अकेलापन नहीं लगता। मुझें वेद व शास्त्रों की बातें प्रिय हैं। स्वामी जी ने कहा कि जब वह चौथी कक्षा में थे तो उन्होंने वहां योग के 15 आसन करके दिखाये थे जिन्हें व्यायाम में शामिल कर लिया गया था। बाद में विद्यालय के बच्चों में इसके शुभ परिणाम देखने को मिले। स्वामी जी ने कहा कि ज्ञान के शिखर पर जाने के लिए चार बातें जरूरी हैं। स्वामी वेदानन्द जी ने कहा कि मनुष्य का भोजन शुद्ध व सात्विक होना चाहिये। उन्होंने कहा कि कुछ समय पहले उनके आश्रम में गुजरात के प्रसिद्ध गोभक्त धर्मबन्धु जी आये थे। उनके शरीर का भार 117 किग्रा. था। वह थोड़ी दूरी तक भी चल फिर नहीं सकते थे। वह मुझसे दर्शन पढ़ना चाहते थे। मैंने उन्हें पहले अपना भार कम करने को कहा। उन्हें अंकुरित भोजन कराया गया। कुछ ही दिनों में उनका भार 15 किग्रा. कम हो गया था। उन्होंने दूसरा उपाय प्राणायाम को बताया। स्वामी जी ने कहा कि प्राणायाम प्रातःकाल करना चाहिये। मन की एकाग्रता भी आवश्यक है। इसके लिए आप प्रतिदिन वेदों का स्वाध्याय करें। इससे आपको एकाग्रता प्राप्त होगी। स्वामी जी ने कहा कि बुद्धि के लिए ध्यान साधना आवश्यक है। ध्यान करने से मनुष्य आत्मा व परमात्मा का साक्षात्कार कर सकता है। अपने प्रवचन को विराम देते हुए स्वामी जी ने कहा कि हमें यह जीवन आत्मा व परमात्मा के साक्षात्कार के लिए मिला है। हमें इनका साक्षात्कार करने का प्रयत्न करना चाहिये।

ठाकुर विक्रम सिंह का उद्बोधन

अपने सम्बोधन में आर्य विद्वान व दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह ने कहा कि मैं यहां आकर स्वयं को इस आश्रम का ऋणी अनुभव कर रहा हूं। उन्होंने बताया कि इस आश्रम की स्थापना के बाद महात्मा आनन्द स्वामी जी ने यहां एक उपदेशक विद्यालय खोला था जिसका मैं एक विद्यार्थी था। इसी कारण मैं इस आश्रम का ऋणी हूं। मैं ऋण चुकाना चाहता हूं परन्तु मैं जानता हूं कि ऋण उतरता नहीं है। मैं तपोवन आश्रम की इस भूमि को नमन करने आया हूं। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने उन दिनों के आश्रम के स्वरूप को भी श्रोताओं के सम्मुख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मैंने अपने जीवन में 20 वर्षों तक उपदेशकी की है। मैं उपदेशक विद्यालय में पढ़ा हूं। मैं शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी जी और पं. रामचन्द्र देहलवी जी के चरणों में बैठकर पढ़ा हूं। (हमें भी स्वामी अमर स्वामी जी के कई बार प्रवचन सुनने का अवसर मिला है। उन पर लेख भी लिखे हैं। उनका लिखा भजन 'अखिलाधार अमर सुखधाम एक सहारा तेरा नाम' हमें अति प्रिय है। इसे हमने आर्यसमाज में स्वामी जी के श्रीमुख से ही सुना था।) मैंने 50 वर्ष की आयु होने पर वानप्रस्थ में प्रवेश किया था। मैंने साधना करने का विचार किया था। मैं अनेक स्थानों पर गया परन्तु कहीं मेरी सन्तुष्टि नहीं हुई। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने अपने दो पुत्रों का परिचय देकर उनके कार्यों का भी परिचय दिया। उन्होंने कहा कि भक्त परमात्मा के चरणों में बैठा है। विद्वान वक्ता ने कहा कि कर्जदार की हालत बुरी होती है। उन्होंने कहा कि कोई भी मनुष्य माता–पिता का ऋण नहीं चुका सकता। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढ़ी सन्तानों पर माता–पिता का ऋण मानती ही नहीं है। वक्ता महोदय ने कहा कि परमात्मा का ऋण तो कोई भी मनुष्य चुका ही नहीं सकता है। परमात्मा ने हमारे लिए सूर्य, चन्द्र और पृथिवी तथा पृथिवी के सभी पदार्थ वायु, जल, अन्न आदि को बनाया है। हम प्रजापति परमेश्वर के उपकारों का पूर्णतः वर्णन नहीं कर सकते। इसी कारण स्विष्टकृदाहुति के बाद प्रजापति परमेश्वर को मौन होकर आहुति देते हैं। उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति ने ऋण से उऋण होने के लिए यज्ञ किया। यज्ञ में घृत व सामग्री आदि की आहुतियां दीं। परमात्मा ने उसे कहा कि समिधायें, यज्ञ सामग्री व घृत आदि सभी कुछ उसके बनाये हुए हैं, इसमें याजक का तो कुछ भी

नहीं है। इस पर याजक वेदमन्त्र 'अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनध्यस्व' मन्त्र से आहुति देता है। विद्वान वक्ता ने कहा कि हमारी अपनी चीज केवल हमारी आत्मा ही है। इसी की आहुति परमात्मा रूपी अग्नि में देने से हमारा कल्याण होता है।

डा. आचार्या अन्नपूर्णा जी का उद्बोधन

द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून की आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने कहा कि परमात्मा ने हमें मनुष्य का श्रेष्ठ जन्म दिया है। उन्होंने कहा कि ऋग्वेद का सार 'मनुर्भव' है। मनुष्य को मनुष्य बनने का प्रयत्न करना चाहिये। मनुष्य बनने के लिए ही मनुष्य को ज्ञान की आवश्यकता है। ज्ञान प्राप्त कर मनुष्य अच्छा मनुष्य बनता है। उन्होंने कहा कि सांख्य दर्शन के ऋषि कपिल के अनुसार ज्ञान से मनुष्य मुक्ति तक भी जा सकता है। डा. आचार्या अन्नपूर्णा जी ने कहा कि हमें योग करना चाहिये। हम योगी बनें। इन्द्रियों का सुख भोगने से मनुष्य का जीवन नष्ट होता है। मनुष्य यदि योगाभ्यास में निष्ठापूर्वक प्रयत्न करता रहे तो इससे समाधि अवस्था प्राप्त कर वह ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि ईश्वर की प्राप्ति होने पर ही हम दुःखों से बच सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज संसार में अच्छे इंसान नहीं बनते हैं। आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने कहा कि यजुर्वेद का सार जीवन को यज्ञमय बनाना है। अग्नि की लपटे हमें उनकी तरह ऊपर उठने का सन्देश देती हैं। उन्होंने कहा कि सत्य व योग के मार्ग पर चलने से जीवन और आत्मा ऊपर उठते हैं। उन्होंने कहा कि हमें यज्ञ के सन्देश 'इदन्न न मम्' को अपने जीवन में उतारना है। आचार्या जी ने कृष्ण, अर्जुन, निर्धन ब्राह्मण, लुटेरे, मछली की एक शिक्षाप्रद कथा भी सुनाई और उसका सार बताते हुए कहा कि मनुष्य जब तक स्वार्थ में रमण करता है उसे सुख नहीं मिलता और जब वह त्याग व परोपकार के कार्य करता है तभी उसे सफलता व सुख प्राप्त होता है। डा. आचार्या अन्नपूर्णा ने कहा कि हमें दूसरों के सुख–दुःख के विषय में विचार करना चाहिये और उनके दुःख दूर करने और सुख पहुंचाने का प्रयत्न करना चाहिये। उन्होंने कहा कि जिन वेद मंत्रों को पढ़ते हैं उनका ज्ञान हमारे जीवन में उतरना चाहिये। परमात्मा हम सबका सखा वा मित्र है। हमें परमात्मा को अपने अच्छे आचरणों से अपना सखा बनाने का प्रयत्न करना चाहिये। इसके बाद हमें संसार में किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं रहेगी। इसे आचार्या जी ने सामवेद का सार बताया। आचार्या जी ने कहा कि अथर्ववेद का सार यह भावना रखना है कि पृथिवी मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूं। उन्होंने कहा कि जीवन में संगतिकरण करना ही यज्ञ है। आचार्या जी ने कहा कि हम चारों वेदों के ज्ञान को अपने जीवन में उतारें तभी हम ईश्वर के प्रिय बनेंगे और तभी हमारा जीवन सफल होगा।

आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी द्वारा सूचनायें एवं कार्यक्रम का समापन

यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद कार्यक्रम का संचालन करते हुए आश्रम के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी ने कहा कि स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से यह यज्ञ किया गया है। जीवन को सफल करने के लिए साधना व योग से जुड़ने के ऐसे आयोजनों में भाग लेना आवश्यक है। ऐसा मैंने यहां 21 दिनों की साधना में अनुभव किया है। मंच पर उपस्थित स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी का परिचय देते हुए शर्मा जी ने कहा कि स्वामी जी ऐसे सन्यासी हैं कि जो देश भर में जा जाकर गुरुकुल खोल कर वैदिक धर्म व संस्कृति का प्रचार व प्रसार कर रहे हैं। मंच पर उत्तरकाशी के स्वामी वेदानन्द सरस्वती भी उपस्थित थे। उनके विषय में शर्मा जी ने कहा कि वह वेदों के विद्वान हैं। उन्होंने इस यज्ञ के समापन के अवसर पर दर्शन देकर यहां की भूमि को पवित्र किया है। ठाकुर विक्रम सिंह जी का परिचय देते हुए शर्मा जी ने बताया है वह दानवीर है और आर्यजगत की सभी संस्थाओं को दान देते हैं। अनेक संस्थायें उनके सहयोग से चल रही हैं। मंच

पर उपस्थित स्थानीय आर्य विद्वान डॉ. नवदीप कुमार का परिचय देते हुए उन्होंने कहा कि आप देहरादून के डीएवी महाविद्यालय से सेवानिवृत हैं और देहरादून की सभी समाजों को ज्ञानवर्धक उपदेश देकर सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

आश्रम के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी ने आर्यसमाज धर्मपुर, देहरादून की ओर से 18 मार्च, 2018 को नवसंवम्सर एवं आर्यसमाज के स्थापना दिवस पर एक वृहद कार्यक्रम की सूचना दी और सबको उसमें आने का निमंत्रण दिया। कार्यक्रम की समाप्ति शान्ति पाठ से हुई। इसके बाद ऋषि लंगर सम्पन्न हुआ। वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के ग्रीष्मोत्सव की तिथियां भी तय हो गयी हैं। 5 दिनों का यह आयोजन तपोवन आश्रम में बुधवार 9 मई से रविवार 13 मई, 2018 तक होगा। उत्सव में आने व आर्थिक सहयोग करने वाले आर्यबन्धु आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी से उनके दूरभाष नं. 09412051586 पर सम्पर्क कर सकते हैं। यह बता दें कि वैदिक साधन आश्रम तपोवन की स्थापना आर्यजगत के उच्च कोटि के विद्वान संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी की प्रेरणा से पंजाब के बावा गुरमुख सिंह जी ने लगभग 70 वर्ष पूर्व की थी। आर्यजगत् के विख्यात विद्वान आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य आश्रम में धर्माचार्य के रूप में निवास करते हैं। अग्निहोत्र में भाग लेने के साथ प्रवचन भी करते हैं। आश्रम में समय समय पर युवक युवतियों के चरित्र निर्माण आदि सहित आरोग्य प्राप्ति के शिविर भी लगते रहते हैं। हम आशा करते हैं कि ऋषि भक्तों के सहयोग से आश्रम प्रगति पर अग्रसर रहेगा।

युवाओं हेतु दिव्य जीवन निर्माण शिविर (आवासीय)

युवती वर्ग– 5 जून सांयकाल से 9 जून 2018 प्रातः काल तक

युवक वर्ग– 12 जून सांयकाल से 16 जून 2018 प्रातः काल तक

आयु सीमा– 15 वर्ष से 32 वर्ष तक

स्थान– वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी देहरादून

शिविर निर्देशक– आचार्य आशीष जी तपोवन आश्रम तथा सहयोगी शिक्षक वर्ग

विषय– 1. Study Skills, 2. पूर्ण व्यक्तित्व विकास, (Total personality development) 3. स्मरण शक्ति तीव्र करने के उपाय, मनोनियन्त्रण 4. सुखी जीवन के टिप्स, ध्यान (मेडीटेशन), आत्म सुरक्षा के उपाय (मार्शल आर्ट्स) एवं 5. वैदिक सार्वजनीन सत्य सिद्वान्तों का परिचय, प्रश्नोत्तर एवं वीडियों शो आदि। भाषा : हिन्दी एवं अंग्रेजी

नियम– 1. शिविर में पूर्ण काल अनुशासित न रहने पर पूरे ग्रुप को अभिभावक के साथ वापिस भेजा जा सकता है। इसकी जिम्मेदारी उन्हीं की मानी जायेगी। 2. प्रतिभागी को माता–पिता अथवा प्रेरक की लिखित स्वीकृति भी जमा करनी होगी। 3. विद्यार्थी को अपनी गलती से हुई व्यक्तिगत हानि की जिम्मेदारी आयोजक की नहीं होगी।

शिविर शुल्क– इस ईश्वरीय कार्य में प्रत्येक प्रतिभागी एवं अभिभावक द्वारा भावना पूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना अनिवार्य है।

आरक्षण– अपना स्थान निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सुरक्षित करा लेवें। 1. श्री नन्दकिशोर जी, मो०– 9310444170 (प्रातः 10 से सायं 4, रात्रि 8 से 10 बजे तक) 2. श्री प्रेम जी, मो०– 9456790201 (प्रातः 10 से सायं 4.30 रात्रि 8 से 9.30 बजे तक) 3. आचार्य आशीष जी, देहरादून मो०– 09410506701 (रात्रि 8 बजे से 9.15 बजे तक)

Saturn Series

CPU Holder

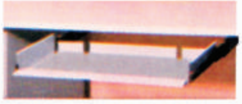

Slide out Keyboard tray

Swivel and Tiltable keyboard tray

Wire Management

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

DE BONO FLEXCOM (INDIA) LTD.: Kukreja House, 1st Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055

Ph : 011-23540721. 23533936 **Fax :** 23533944 **Email :** debono@debonoindia.com

E-mail : delite@delitekom.com

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2018-2020 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

With Best Compliments From MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फन्ट फोर्क्स
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बस बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर / फोर व्हीलर उदयोगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।
संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com